THRU the BIBLE

प्रतिज्ञाएँ और उत्तराधिकार

खंड 5 – उत्पत्ति 25 से 36



मिलें बढ़ें बाँटें

मिले, बाँट और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें



मिलें सप्ताह में **एक बार**

आओ तैयार होकर

टीवी की शिक्षाएँ पढ़ें, सुनें या देखें

कोई उपदेश नहीं। कोई शिक्षा नहीं। बल्कि **एक-दूसरे से** साझा करना और सीखना।

एक साथ मिलना

चर्चा करते हुए कि अपने **परमेश्वर की बुद्धि** से क्या प्राप्त किया

सीखना

धर्मग्रंथों के प्रश्नों पर चर्चा

अंत में प्रार्थना

अपने अगले मिलन के लिए **पहले से तैयारी करें**

कैसे
धर्मग्रंथ संलग्नता का उपयोग करे



शुरू करने से पहले प्रार्थना करें
प्रत्येक पाठ को शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको अनुग्रह में और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ाने के लिए करें।



बाइबल का अंश पढ़ें
जब आप अंश पढ़ें तो परमेश्वर को अपनी आँखें खोलने और उसके वचन की आपकी समझ को गहरा करने के लिए आमंत्रित करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता मार्गदर्शिका का अध्ययन करें
आपके द्वारा पढ़े गए अंश के अर्थ, संदर्भ और व्यक्तिगत अनुप्रयोग पर चिंतन करने के लिए प्रदान की गई पवित्रशास्त्र संलग्नता अध्ययन का अध्ययन करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर चिंतन करें
प्रत्येक शिक्षण के बाद, व्यक्तिगत चिंतन और अनुप्रयोग के लिए सूचीबद्ध पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर विचार करें और आपके छोटे समूह चर्चाओं के लिए।



डॉ. जे. वर्नोन मैगी की शिक्षा को सुनें
यदि आप इस अंश पर संपूर्ण ऑडियो शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो ttb.bible पर जाएं या अपनी भाषा में THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करने के लिए अंतिम पृष्ठ पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें।



हमारे सुझाए गए रुकने और शुरू करने के आइकन का इस्तेमाल करें। यह आपको सामग्री को सोच-समझकर और अपनी लय में आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

आपके लिए

इस शास्त्र-वचन अध्ययन का उपयोग कैसे करें पृष्ठ 2

एक अस्वस्थ परिवार में परमेश्वर का अनुग्रह
(उत्पत्ति 25 – 29:30) पृष्ठ 7

परिणाम परमेश्वर के हाथों में
(उत्पत्ति 29:30 – 36) पृष्ठ 61


जुड़वां
उत्पत्ति 25

जुड़वां

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 25
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 25

प्रिय परमेश्वर,

हम इस समय के लिए धन्यवाद के साथ आपके सामने आते हैं। जब हम आपके वचन पर मनन करें, तो हमारे हृदय और मन खोल दीजिए। हमें अपना सत्य सिखाइए, हमारी समझ का मार्गदर्शन कीजिए, और हमें बुद्धि में बढ़ने तथा आपके मार्गों पर भरोसा करना सिखाइए।

आमीन।

शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष

उत्पत्ति 25

इसहाक और रिबका ने **साथ में अपना जीवन शुरू किया** और वे खुश थे। लेकिन सारा की तरह, रिबका भी माँ नहीं बन पा रही थी। **इसहाक ने 20 साल तक उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की** और आखिरकार परमेश्वर ने कहा, "अब समय आ गया है।" **तब वह जुड़वाँ बच्चों से गर्भवती हुई।** उसकी **गर्भावस्था** आसान नहीं थी। **दोनों बच्चे गर्भ में आपस में संघर्ष कर रहे थे** और रिबका ने इस बारे में परमेश्वर से पूछा। वह जान गई थी कि **कुछ महत्वपूर्ण हो रहा है।**

इन दो लड़कों का संघर्ष, जो उनके जन्म से पहले ही शुरू हो गया था, उस संघर्ष को दिखाता है जो आज भी दुनिया में चल रहा है। यह ज्योति और अंधकार के बीच, भलाई और बुराई के बीच, आत्मा और शरीर की अभिलाषाओं के बीच का संघर्ष है। परमेश्वर की हर संतान इस संघर्ष से परिचित है। (इसके बारे में रोमियों 7 में पढ़ें)।



> इन दो लड़कों का संघर्ष, जो उनके जन्म से पहले ही शुरू हो गया था, उस संघर्ष को दर्शाता है जो आज भी दुनिया में जारी है।



अव्यवस्थित परिवार

इसहाक - पिता

एसाव - चहेता पुत्र

इसहाक एसाव से प्रेम करता था

- एसाव इसहाक का प्रिय पुत्र था, क्योंकि वह खुले मैदानों में रहने वाला, शिकार करने वाला, बलवान और साहसी व्यक्ति था।
- इसहाक एसाव की शारीरिक क्षमता की प्रशंसा करता था और उसे वह शिकार भी पसंद था जो एसाव घर लाता था।
- इस पक्षपात ने शुरू से ही परिवार में असंतुलन पैदा कर दिया।

"इसहाक एसाव से प्रेम करता था, क्योंकि वह उसके शिकार का मांस खाता था..." (उत्पत्ति 25:28)

एसाव का स्वभाव

साहसी, कठोर स्वभाव का, और शारीरिक इच्छाओं से प्रेरित।



- सांसारिक बातों में लगे रहना।
- आत्मिक विरासत को उसने अधिक महत्व नहीं दिया।
- शारीरिक अभिलाषाओं को दर्शाता था।

रिबका - माता

याकूब - चहेता पुत्र

रिबका याकूब से प्रेम करती थी

- याकूब रिबका का चहेता था; वह घर के पास ही रहता था और उसकी देख-रेख में रहता था।
- जन्म से पहले ही परमेश्वर ने घोषित कर दिया था कि याकूब अगुवाई करेगा।
- फिर भी, जो वादा परमेश्वर ने पहले ही कर दिया था, उसे पाने के लिए याकूब अक्सर चालाकी और हेर-फेर का सहारा लेता था।



"...पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी।"(उत्पत्ति 25:28)

याकूब का स्वभाव

- शांत, विचारशील और आध्यात्मिक रूप से जागरूक।
- परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को महत्व देता था।
- आत्मनिर्भरता और धोखे से संघर्ष करता रहा।
- कमियों के बावजूद, परमेश्वर उसे अपने मकसद के लिए ढाल रहे थे।

जन्मसिद्ध अधिकार की घटना

पाप नष्ट करने की खोज में

एसाव खेत से लौटा। वह बाहर था और **थक गया था तथा उसे भूख भी लगी थी।** उसी समय याकूब ने एक दाल तैयार की हुई थी; स्पष्ट है कि वह अच्छा रसोइया था।

"मुझे वही लाल दाल खाने को दे, क्योंकि मैं थका हुआ हूँ," एसाव ने माँगा। याकूब ने अपना मौका देख लिया। **वह एक छली और विश्वासघाती था, और वह बड़े भाई का हक़दार जेठे होने का अधिकार चाहता था।** याकूब ने कहा, "मैं यह दाल तुझे तेरे जेठे होने के अधिकार के बदले में दूँगा।"

जन्मसिद्ध के अधिकार का अर्थ यह था कि जिसके पास यह अधिकार होता, वही परिवार का **मुखिया और परिवार का याजक होता।** इस परिवार में, इसका मतलब था कि जिसके पास यह होगा **वह उस पंक्ति में शामिल होगा जो मसीह की ओर ले जाएगी।** एसाव ने इसे **कोई महत्व नहीं** दिया, और वह **परिवार का याजक नहीं बनना चाहता था। वह यह आभास भी नहीं देना चाहता था कि उसे ईश्वरीय चीज़ों में रुचि है।** "उसे उस पीढ़ीगत वंश में बने रहने में कोई दिलचस्पी नहीं थी जो प्रभु यीशु मसीह तक पहुँचता था।

याकूब यह देखता है और एक चाल चलता है, **"अगर तू मुझे अपना जन्मसिद्ध अधिकार दे दे, तो मैं तुम्हें एक कटोरा दाल दूँगा।"** एसाव इस सौदे से खुश हो गया।

याकूब जितना परमेश्वर को महत्व देता था, फिर भी उसने जो किया वह गलत था। परमेश्वर ने पहले ही वादा किया था, **"बड़ा छोटे की सेवा करेगा।" याकूब को उसका जन्मसिद्ध अधिकार परमेश्वर के सही समय पर मिलने वाला था।** लेकिन याकूब इंतज़ार नहीं कर सका, इसलिए उसने वह चीज़ खुद ही ले ली जिसका वादा परमेश्वर ने उससे किया था। उसे परमेश्वर के उसे देने का इंतज़ार करना चाहिए था। याकूब ने सोचा कि वह अपने लिए जो कर सकता है, करेगा। जब तक वह खुद अपनी मदद कर सकता था, **तब तक परमेश्वर का इंतज़ार क्यों करे? वह काफी चतुर था।** भविष्य में, **याकूब को परमेश्वर से एक कड़ा सबक सीखना था; जैसा तुम बोओगे, वैसा ही काटोगे!**

इसलिए **"एसाव ने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ समझा"** और बैठकर अपनी दाल खाने लगा। **उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार छोड़ दिया क्योंकि उसके लिए उसका कोई महत्व नहीं था।**



> "याकूब को परमेश्वर के सही समय पर जन्मसिद्ध अधिकार मिलने वाला था। लेकिन याकूब इंतज़ार नहीं कर सका, इसलिए उसने वह चीज़ ले ली जिसका परमेश्वर ने उससे वादा किया था।"





परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 25 से हमारे लिए सीख

1

शरीर और आत्मा के बीच लगातार चलने वाला संघर्ष ज़िंदगी भर चलने वाला संघर्ष है। याकूब और एसाव के बीच ज़िंदगी भर चलने वाला संघर्ष, जो गर्भ में ही शुरू हो गया था, रोशनी और अंधेरे, अच्छाई और बुराई, और आत्मा और शरीर के बीच चलने वाली लड़ाई को दिखाता है। असलियत यह है कि परमेश्वर का हर बच्चा इस संघर्ष का अनुभव करेगा।
(गलातियों 5:16-17; रोमियों 7:22-23; रोमियों 8)

2

दुनियावी चीज़ों के मुकाबले, मसीह जैसा बनने की हमारी इच्छा परमेश्वर के लिए ज़्यादा मायने रखती है। एसाव शारीरिक स्वभाव का प्रतीक है; वह एक बलवान, बाहर रहने वाला व्यक्ति था, जिसमें परमेश्वर के लिए न तो कोई इच्छा थी और न ही कोई क्षमता। वह पूरी तरह से दुनियावी इंसान की तरह जीता था और उसने अपने "जन्मसिद्ध अधिकार" को तुच्छ समझा—जो परिवार में आत्मिक मुखिया होने और मसीह की वंशावली को आगे बढ़ाने का अधिकार था। दूसरी ओर, याकूब में कई कमियाँ थीं और वह चालाक भी था, लेकिन अंदर ही अंदर वह समझता था कि जीवन का मकसद कुछ और है और वह परमेश्वर को महत्व देता था। **परमेश्वर ने याकूब की कमियों के बावजूद उसके जीवन में काम किया और उसे बेहतर बनाया, क्योंकि याकूब परमेश्वर के लिए जीना चाहता था।**
(इब्रानियों 12:16–17; 1 यूहन्ना 2:15–17)

3

हमें इंसानी चालबाज़ी पर निर्भर रहने के बजाय परमेश्वर के सही समय पर भरोसा करना चाहिए। जुड़वाँ बच्चों के जन्म से पहले ही परमेश्वर ने वादा किया था कि बड़ा (एसाव) छोटे (याकूब) की सेवा करेगा। जन्मसिद्ध अधिकार याकूब के लिए ही था, लेकिन परमेश्वर के सही समय का इंतज़ार करने के बजाय, याकूब ने गलत तरीके से मामला अपने हाथ में ले लिया और उसे पाने के लिए चालाकी का सहारा लिया। **हमारे लिए सीख यह है कि हम खुद चालाकी से चीज़ों को बदलने की कोशिश करने के बजाय, परमेश्वर के वादों को पूरा करने का इंतज़ार करें।**
(रोमियों 9:10-12; याकूब 4:13-15)

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1
मेरे जीवन में इस समय किन क्षेत्रों में मैं अपनी शारीरिक अभिलाषाओं और परमेश्वर के वचन के अनुसार चलने की इच्छा के बीच संघर्ष का अनुभव कर रहा हूँ?

सवाल 2
क्या मैं अपनी रोज़मर्रा की आदतों में शारीरिक कामों को प्राथमिकता देकर अपनी "शरीर की इच्छाओं" को बढ़ावा दे रहा हूँ, या मैं सक्रिय रूप से परमेश्वर के लिए अपनी क्षमता को बढ़ा रहा हूँ ताकि मैं उनकी बात मान सकूँ?

सवाल 3
क्या ऐसे कोई क्षेत्र हैं जहाँ मैं, एसाव की तरह, अपनी लंबे समय की आध्यात्मिक विरासत को तुरंत मिलने वाली सांसारिक खुशी (एक "कटोरा दाल") के लिए दांव पर लगा रहा हूँ?

सवाल 4
भले ही मुझमें भी याकूब की तरह कमियाँ और नाकामियाँ हों, क्या मैं परमेश्वर को दुनिया की "गंदगी" हटाने दे रहा हूँ, ताकि मुझमें परमेश्वर की चीज़ों के लिए एक सच्ची और गहरी चाहत पैदा हो सके?

सवाल 5
ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जिनमें मेरा मन "हेरफेर करने वाला" बनने या चालाकी भरी तरकीबें अपनाकर मनचाहा नतीजा पाने का करता है, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं परमेश्वर के इंतज़ाम का इंतज़ार नहीं कर सकता?

सवाल 6
मैं अपनी सहायता स्वयं करने की इच्छा को कैसे बेहतर ढंग से परमेश्वर के अधीन कर सकता हूँ, ताकि भरोसा रख सकूँ कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को अपने सिद्ध समय पर मेरे जीवन में पूरा करेगा?


इसहाक का जीवन
उत्पत्ति 26

इसहाक का जीवन

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 26
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 26

प्रिय परमेश्वर,

धैर्य, आज्ञाकारिता और आपकी सच्चाई पर भरोसे के लिए, इसहाक के उदाहरण के लिए आपका धन्यवाद। जब हम आपके वचन का अध्ययन करते हैं, तो हमें आपके सही समय पर भरोसा करने, आज्ञाकारिता में चलना, और हर परिस्थिति में आपके वादों में विश्राम करना सिखाइए। हमारे दिलों को ऐसा बनाएं कि उनमें आपकी शांति दिखे और हम पूरी निष्ठा से आपके पीछे चल सकें।

आमीन।

इसहाक के जीवन के बारे में और जानकारी

उत्पत्ति 26

प्रभु ने अब्राहम, याकूब और दाऊद जैसे पुरुषों को बुलाया, जो दृढ़ निश्चयी और कर्मशील थे। परन्तु परमेश्वर ने इसहाक को भी बुलाया, जिसका हमारे लिए महान संदेश धैर्य के बारे में है।

जब उसके जुड़वाँ पुत्र बड़े हो रहे थे, तब इसहाक और रिबका का परमेश्वर के साथ अपना एक सफ़र चल रहा था। एक **समय इस्राएल में अकाल पड़ा**, ठीक वैसा ही जैसा इसहाक के पिता अब्राहम ने उस समय अनुभव किया था, जब वह और लूत मिस्र चले गए थे।

लेकिन परमेश्वर ने इसहाक से साफ़-साफ़ कहा कि **वह मिस्र न जाए।** परमेश्वर ने उससे ऐसा क्यों कहा? क्योंकि **अगर वह ऐसा न कहता,** तो वही कहावत सच हो जाती-**"जैसा बाप, वैसा बेटा।"** **पाप के मामले में पीढ़ियों के बीच कोई फ़र्क नहीं होता। यह बस एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चला जाता है।** आम तौर पर, बेटा भी वही गलतियाँ करता है जो उसके पिता ने की थीं, जब तक कि परमेश्वर बीच में आकर कुछ न करे। और परमेश्वर ने ऐसा ही किया। **उसने इसहाक को अकाल के समय बचने के लिए साफ़ निर्देश दिए और उसके पिता अब्राहम के साथ किए गए अपने वादे को पक्का किया।**

परमेश्वर ने इसहाक से कहा, **"यह देश मत छोड़; मिस्र मत जा। मैं तेरे साथ वह वादा पक्का करना चाहता हूँ जो मैंने अब्राहम के साथ किया था।"**

और उसने इन **तीन प्रतिज्ञाओं को फिर से** दोहराया:

1. **भूमि - "क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंशजों को ये सारी ज़मीनें देता हूँ,"**
2. **राष्ट्र - "मैं तेरे वंश को आकाश के तारों के समान बढ़ाऊँगा।"**
3. **आशीष - "और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी की सब जातियाँ आशीष पाएँगी।"** (उत्पत्ति 26:3-5 देखें)

परमेश्वर ने ऐसा इसलिए **किया क्योंकि अब्राहम ने उनकी बात मानी और उनकी आज्ञाओं का पालन किया। जब परमेश्वर ने अब्राहम से कुछ कहा, तो उसने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसके अनुसार काम किया। उसने अपने कामों से अपना विश्वास दिखाया। विश्वास वह है जिस पर आप कदम बढ़ाते हैं।** अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और परमेश्वर ने उसे धार्मिकता के रूप में गिना। अब परमेश्वर इसहाक से कह रहे हैं कि वे चाहते हैं कि वह भी वैसा ही इंसान बने।



जैसा बाप, वैसा बेटा

अब्राहम और इसहाक दोनों इसराइल देश के दक्षिणी हिस्से में रहते थे। इसहाक ने परमेश्वर की बात मानी और मिस्र नहीं गया, लेकिन वह अपने परिवार के साथ दक्षिण में गरार को चला गया।

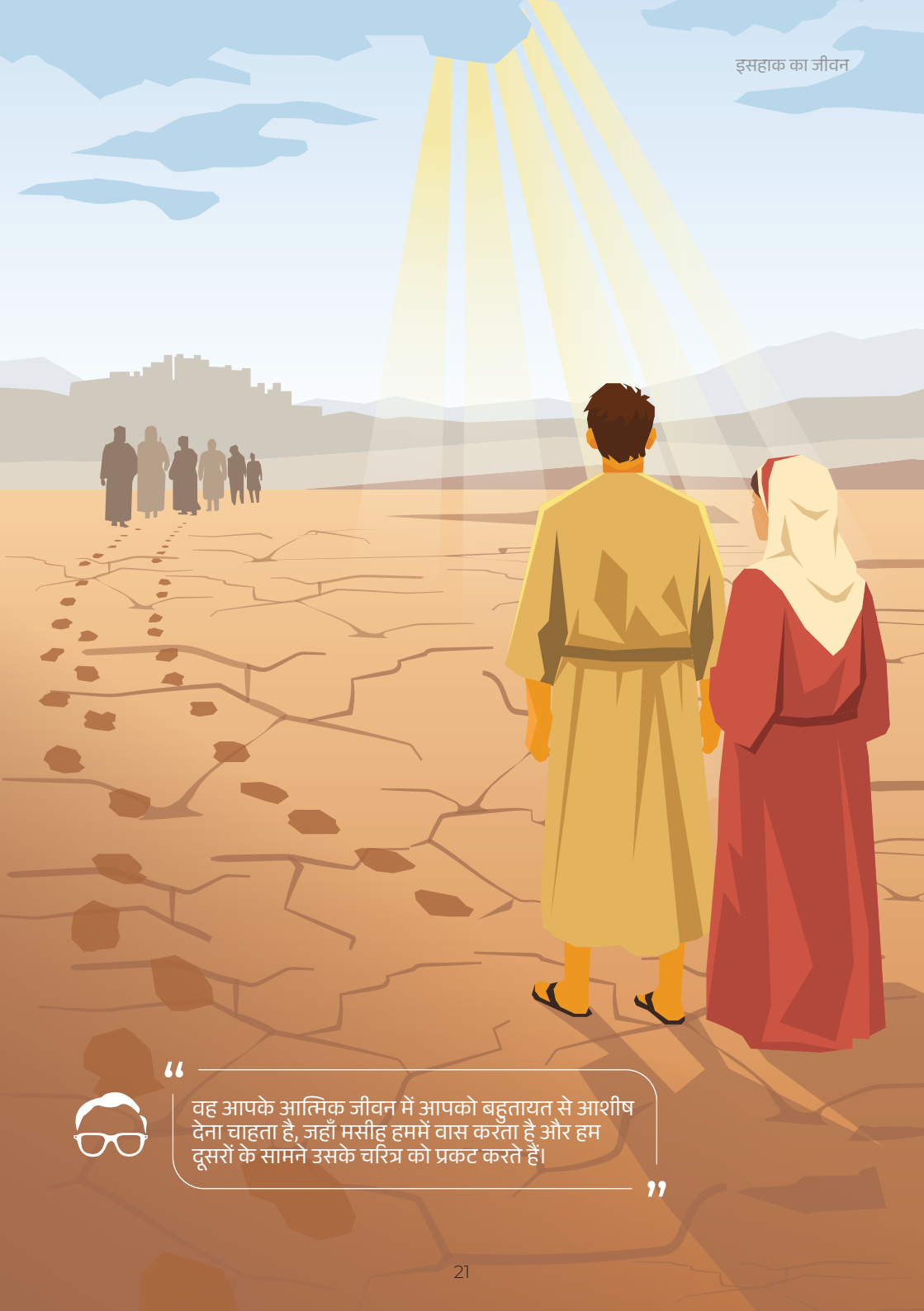
गरार के पुरुषों की नज़र जल्द ही सुंदर रिबका पर पड़ी। **इसहाक को डर था कि वे रिबका को पाने के लिए उसे मार डालेंगे, इसलिए उसने भी अपने पिता के पाप को दोहराया और कहा, "यह मेरी बहन है।"** अंतर यह था कि **अब्राहम ने आधा झूठ बोला था, जबकि इसहाक ने पूरा झूठ बोला। लेकिन उनका राज़ खुल गया।** कुछ समय बाद, पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने **इसहाक को रिबका के प्रति स्नेह दिखाते हुए देखा। तब उसे तुरंत समझ में आ गया कि वे पति-पत्नी हैं, भाई-बहन नहीं।**

अबीमेलेक ने पूछा, **"तूने हमें इतने बड़े खतरे में क्यों डाला? "हो सकता था कि हम गलती से उसे ले जाते।"** फिर अबीमेलेक ने **इसहाक और रिबका की सुरक्षा के लिए आदेश जारी किया और किसी को भी उन्हें छूने से मना कर दिया।** अबीमेलेक इसहाक का **अच्छा दोस्त बन गया। इसहाक का समाज में वैसा ही सम्मान था जैसा उसके पिता अब्राहम का था।**

प्रभु ने इसहाक को आशीष दी

इसहाक गरार में उन्नति करता गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी। उसकी फसलें भरपूर हुईं, और उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ती गई। वह सांसारिक आशीषों का आनंद ले रहा था। **जैसे-जैसे वे परमेश्वर के साथ संगति में चलता रहा, परमेश्वर ने अपनी आशीष की प्रतिज्ञा पूरी की। परमेश्वर आज हमें वैसी सांसारिक आशीष का नहीं, बल्कि मसीह में आत्मिक आशीषों का वादा करता है** (इफिसियों 1:1-14)। आज यही हमारा भाग है, जो परमेश्वर के साथ हमारे चलने पर निर्भर करता है। यदि आप उसे अनुमति दें, **तो वह आपके आत्मिक जीवन में आपको बहुतायत से आशीष देना चाहता है, जहाँ मसीह हममें वास करता है और हम दूसरों के सामने उसके चरित्र को प्रकट करते हैं।**

इसहाक के खेत में सौ गुना फ़सल हुई। उसका जीवन भी उसके पिता के जीवन की तरह ही शानदार रहा। और यह उचित ही है कि हम उनके जीवन को एक-दूसरे से जोड़कर देखें। इसहाक का जन्म और उसका जीवन अब्राहम के अनुभवों से गहराई से जुड़ा हुआ है।



"वह आपके आत्मिक जीवन में आपको बहुतायत से आशीष देना चाहता है, जहाँ मसीह हममें वास करता है और हम दूसरों के सामने उसके चरित्र को प्रकट करते हैं।"

हालांकि जब वेदी पर इसहाक की बलि चढ़ाई जा रही थी, तो वह इसहाक के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था, लेकिन उस समय भी अब्राहम और इसहाक दोनों साथ-साथ थे।

उनके साथ के अनुभव हमारे लिए उदाहरण के तौर पर पेश किए गए हैं। **इससे प्रभु यीशु मसीह और पिता के बीच के गहरे रिश्ते की एक शानदार तस्वीर भी सामने आती है।** यीशु ने कहा, **"जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है"** (यूहन्ना 14:9)। **और यीशु की महायाजकीय प्रार्थना में, उन्होंने कहा, "मैंने पृथ्वी पर आपकी महिमा की है। मैंने वह काम पूरा कर लिया है जो आपने मुझे करने के लिए दिया था"** (यूहन्ना 17:4)। साथ ही, उन्होंने कहा, **"मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ"** (यूहन्ना 5:17)। इसलिए, यह बहुत उचित है कि **इसहाक** और अब्राहम **की कहानी** एक साथ सुनाई जाए।

इसहाक और उसके कुएँ

अब इसहाक **पलिश्तियों के खिलाफ़ अपने पैरों पर खड़ा होता** है और यह ठीक नहीं होता। पलिश्ती **इसहाक की समृद्धि से जलते हैं**, इसलिए उन्होंने उसके कामों में बाधा डालनी शुरू कर दी। अब्राहम ने अपने झुंडों को पानी पिलाने के लिए इस ज़मीन पर कई कुएँ खोदे थे, **लेकिन पलिश्ती उन्हें भर रहे थे।** (उनके साथ यह झगड़ा दाऊद के समय तक बढ़ता रहा।)

अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, **"तू हमारे लिए मुश्किलें खड़ी कर रहा है, और बेहतर होगा कि तू यहाँ से चला जा।"** पानी की वजह से चरवाहों के बीच झगड़ा हो रहा था। इसहाक के लोग कुआँ खोदते, और वे उसे उनसे छीन लेते। **वह आगे बढ़ जाता, दूसरा कुआँ खोदता, और वे उसे भी उससे छीन लेते।** वह बस आगे बढ़ता ही जाता।

इसहाक सचमुच धैर्यवान और शांति रखने वाला व्यक्ति था! एक समय उसने एक कुएँ का नाम रखा, "यहोवा ने हमारे लिए स्थान बना दिया है," क्योंकि अब वे दोनों इस देश में फलवन्त हो सकते थे।



> "इसहाक सचमुच धैर्यवान और शांति रखने वाला व्यक्ति था!"

परमेश्वर का इसहाक से मिलना

आखिर में, **इसहाक दक्षिण में बेर्शेबा चला जाता है, और वहीं पर परमेश्वर उसे दिलासा देने के लिए उसके सामने प्रकट होते हैं।** **(परमेश्वर अब्राहम, इसहाक और इसहाक के बेटे याकूब को दिखाई देते हैं।) पलिश्तियों के क्षेत्र से निकल आने के उसके निर्णय से परमेश्वर अवश्य प्रसन्न हुआ होगा।**

"और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, "मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूँगा, और तेरा वंश बढ़ाऊँगा।""
उत्पत्ति 26:24

और उस जगह पर, इसहाक ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर का नाम पुकारा। उसके सेवकों ने एक कुआँ भी खोदा। **(आप हमेशा इसहाक के बगल में एक कुआँ बना सकते हैं। और आप अब्राहम के बगल में एक वेदी बना सकते हैं। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, आप याकूब के बगल में एक तम्बू बना सकते हैं।)**



परमेश्वर में इसहाक के विश्वास ने उसके पड़ोसियों को प्रभावित किया

जल्द ही, गरार का उनका पुराना मित्र अबीमेलेक अपने सलाहकार और अपनी सेना के प्रधान के साथ आधिकारिक रूप से **उससे मिलने आया।** उन्होंने इसहाक पर **परमेश्वर की आशीष की गवाही दी** और परमेश्वर की महिमा की (पद 28-29)। इसहाक ने उनसे पूछा, **"जब तुमने मुझे अपने यहाँ से भेज दिया था, तो अब क्यों आए हो?"**

उन्हें डर था कि कहीं इसहाक उन पर हमला न कर दे, इसलिए उन्होंने उसके साथ एक संधि करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, "हमारे और तुम्हारे बीच एक शपथ हो, और हम तुम्हारे साथ एक वाचा बाँधें, कि तुम हमारा कोई नुकसान न करना; क्योंकि हमने तुम्हें नहीं छुआ, तुम्हारे साथ केवल भलाई की है, और तुम्हें शान्ति के साथ विदा किया है। अब तुम यहोवा के आशीष पाए हुए हो।" (उत्पत्ति 26:28-29)

इसलिए इसहाक और अबीमेलेक ने **एक-दूसरे पर हमला न करने का समझौता किया** और इसे एक दावत के साथ पक्का किया, **जो इसहाक ने अपने समझौते के साथियों के लिए तैयार की थी।** प्राचीन निकट पूर्व में साथ मिलकर खाना अक्सर एक पवित्र रस्म होती थी, जिससे कोई समझौता पक्का होता था।

हालांकि गरार के लोगों के साथ व्यवहार करते समय इसहाक एक शांतिप्रिय व्यक्ति के समान कमजोर दिखाई देता है, फिर भी उसका जीवन और परमेश्वर में उसका सम्मानजनक विश्वास उसके पड़ोसियों को प्रभावित कर गया। **इसहाक की सामर्थ्य उस रूप में प्रकट हुई, जैसी लोगों ने अपेक्षा नहीं की थी।**

एसाव ने जानबूझकर परमेश्वर और अपने माता-पिता के विरुद्ध पाप किया

फिर हमें पता चलता है कि उसके बेटे एसाव (जो अब 40 साल का था) ने हित्ती कबीले की दो कनानी लड़कियों से शादी की। ज़ाहिर है, यह कबीला परमेश्वर के श्राप के अधीन था। लेकिन **एसाव को इस बात की कोई परवाह नहीं थी** कि परमेश्वर ने उसके परिवार को एक खास मकसद के लिए चुना था; इसके बजाय, वह दुनिया में एक बड़ा आदमी बनना चाहता था। **उसके इस फ़ैसले से इसहाक और रिबका को बहुत दुख हुआ।**

ऐसी शांति जिसने सम्मान दिलाया



परमेश्वर का अनन्त सत्य

उत्पत्ति 26 से हमारे लिए सीख

1

पाप का असर पीढ़ियों तक रहता है, लेकिन परमेश्वर ही उससे छुटकारा दिलाते हैं। इसहाक ने भी डर के कारण झूठ बोलकर और अपनी पत्नी रिबका को अपनी बहन बताकर वही पाप किया जो अब्राहम ने किया था। पाप स्वाभाविक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में फैलता है, जब तक कि **परमेश्वर बीच में आकर उसे रोक न दें। मसीह द्वारा हमारे पापों की सज़ा भुगतने से** हमें पाप की पीढ़ी के असर से छुटकारा मिलता है, और यही सच्चाई हमें नए जीवन में जीने की आज़ादी देती है। (1 पतरस 1:18-19; 2 कुरिन्थियों 5:17)

2

परमेश्वर के साथ संगति करने से आत्मिक आशीषें मिलती हैं। जैसे इसहाक ने परमेश्वर के साथ संगति में जीवन बिताया, वैसे ही परमेश्वर ने अपने वादों को पूरा किया और उसे भरपूर आशीष दी। आज विश्वासियों के लिए **यह अनन्त सत्य है कि परमेश्वर मसीह में हम पर भरपूर आत्मिक आशीषें बरसाना चाहते हैं; यह आशीष मसीह जैसा स्वभाव है जिसे हम उनके साथ अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपनाएंगे और उनकी संगति का आनंद लेंगे।** (इफिसियों 1:1-14)

3

धैर्य और मेल करवाने का स्वभाव संसार के सामने एक सामर्थी गवाही है। जब पलिश्तियों को जलन हुई और उन्होंने इसहाक के कुओं को बुरी नीयत से भर दिया, तो इसहाक ने बदला नहीं लिया। **उसने लड़ाई से बचने के लिए बस आगे बढ़कर और नए कुएँ खोदकर बहुत धैर्य और शांति दिखाई।** इस बिना हमला किए ताकत और ईमानदार विश्वास ने आखिरकार उसके दुश्मनों पर प्रभाव डाला, जिससे वे मान गए कि इसहाक यहोवा का आशीष पाया हुआ है और उन्होंने उसके साथ शांति का समझौता करने की कोशिश की। (रोमियों 12:17–21; 1 पतरस 2:23)

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

परिवार में चली आ रही कौन-सी नकारात्मक तौर-तरीकों या "पीढ़ियों से चले आ रहे पापों" (जैसे इसहाक ने भय के कारण अपने पिता के उसी झूठ को दोहराया) ऐसी हैं, जिन्हें तोड़ने के लिए मुझे अपने जीवन में परमेश्वर के हस्तक्षेप की आवश्यकता है?

सवाल 2

मसीह में आत्मिक आशीषों का आनंद लेने, मसीह की धार्मिकता और पवित्रता में जीने और आत्मा के फल का अनुभव करने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

सवाल 3

जब मैं ईर्ष्या, शत्रुता या अन्याय का सामना करता हूँ जैसे पलिश्तियों ने द्वेषपूर्वक इसहाक के कुओं को मिट्टी से भर दिया था तो क्या मेरी पहली प्रतिक्रिया बदला लेने की होती है, या मैं शान्ति का मार्ग चुनकर धैर्यपूर्वक आगे बढ़ जाता हूँ?



एक टूटा हुआ घर

उत्पत्ति 27

एक टूटा हुआ घर

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 27
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 27

प्रिय परमेश्वर,

जब हम आपकी उपस्थिति में इकट्ठा होते हैं, तो हमारे दिलों को शांत करें और ध्यान भटकाने वाली चीज़ों को दूर करें। हमें छल की कीमत और आपके वादों के बजाय अपनी ही युक्तियों पर भरोसा करने के खतरे को समझने में हमारी सहायता कीजिए। हमें ईमानदारी और विश्वास के साथ आपकी प्रतीक्षा करना सिखाएं।

आमीन।

घर में नाखुशी

उत्पत्ति 27

इसहाक एसाव को ज़्यादा प्यार करता था और रिबका याकूब को। उनका घर भला कैसे खुशहाल हो सकता था? घर में सबसे पहली समस्या यह थी **कि इसहाक का आशीर्वाद किसे मिलेगा?** परमेश्वर ने रिबका से वादा किया था कि **"बड़ा छोटे की सेवा करेगा"** (उत्पत्ति 25:23), इसलिए आशीर्वाद याकूब के लिए तय था। यह जानते हुए भी, इसहाक ने याकूब को नज़रअंदाज़ करके एसाव को आशीर्वाद देने की कोशिश की। **याकूब ने खुद आशीर्वाद पाने के लिए एक चाल चली।**

किसी को भी परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं था। और धोखे की वजह से परिवार **बिखर गया और फिर कभी एक नहीं हो पाया।**



“किसी को भी परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं था। और धोखे की वजह से परिवार बिखर गया और फिर कभी एक नहीं हो पाया।”

याकूब एसाव का जन्मसिद्ध अधिकार ले लेता है

हमने इसहाक की यात्राओं, समझौते करने और कुएँ खोदने के दौरान उसेक साथ सफ़र किया है। **हम जानते हैं कि वह शांति और धैर्य रखने वाला एक महान व्यक्ति था, साथ ही वह एक प्रभावशाली और शक्तिशाली इंसान भी था।** लेकिन अब **वह बूढ़ा हो चुका हैं और उसकी नज़र कमज़ोर हो गई है; उसे पता है कि उसकी ज़िंदगी का सफ़र अब खत्म होने वाला है।**

अपनी पूरी ज़िंदगी में, एसाव उसका पसंदीदा बेटा रहा था। वह बाहर घूमने-फिरने वाला लड़का था जो हिरण या कोई और जानवर शिकार करके लाता था और उसे ठीक वैसे ही पकाता था जैसा उसके पिता को पसंद था। अब वह अपने बेटे को आशीर्वाद देना चाहता था। **उसे पता था कि परमेश्वर ने कहा था "बड़ा छोटे की सेवा करेगा," लेकिन एसाव को आशीर्वाद देने के लिए वह जानबूझकर यह बात भूल जाता था।** वह एसाव से कहता था कि वह जाकर मांस का शिकार करे, और कहते था कि ऐसा करने पर वह उसे आशीर्वाद देंगा।

क्या आपने उत्पत्ति के इस आखिरी हिस्से में परिवार के **झगड़ों** पर ध्यान दिया है? पहले, हागार की वजह से अब्राहम के परिवार में परेशानी हुई थी। अब **जुड़वां बच्चों को लेकर इस परिवार में झगड़ा हो रहा है।**

रिबका ने इसहाक की एसाव से कही बात **सुन ली।** चूँकि याकूब उसका चहेता था, इसलिए उसने एक **चालबाज़ी भरी जवाबी योजना बनाई।** परमेश्वर ने इसे अपने वचन में शामिल किया है क्योंकि यह एक ऐतिहासिक तथ्य है, लेकिन यह **पूरी तरह से धोखा है और इसे सही नहीं ठहराया जा सकता।**

रिबका याकूब से दो बकरियाँ मारने के लिए कहती है और कहती है कि वह उन्हें वैसे ही पकाएगी जैसा उसके पति को पसंद है। फिर वह कहती है, **"तब तुम इसे अपने पिता के पास ले जाना ताकि वे इसे खा सकें और मरने से पहले तुम्हें आशीर्वाद दे सकें।"** (v.10)

> "याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, "सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन
>
> पुरुष हूँ। कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, **तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहरूँगा;** और आशीष के बदले श्राप ही कमाऊँगा।" (v11-12)

रिबका ने उससे कहा कि वह वैसा ही करे जैसा उसने कहा है, और वह सब संभाल लेगी। **उसने एसाव के कुछ कपड़े लिए और याकूब को पहना दिए, और फिर उसके हाथों और गर्दन पर बकरियों की खाल लगा दी।** इसके बाद उसने उसे तैयार किया हुआ मांस और रोटी दी और याकूब को उन्हें लेकर इसहाक के कमरे में भेज दिया। **जब उसके पिता उसके हाथों और गर्दन को छूते, तो उन्हें लगता कि वह एसाव है। एसाव के कपड़ों की वजह से याकूब से भी एसाव जैसी ही महक आने लगी थी।**

तब याकूब इसहाक के पास गया और उसने अपना किरदार बखूबी निभाया। **उसने हर बात का सही जवाब दिया और एक धार्मिक धोखेबाज़ की तरह पेश आया। इस धोखे में प्रभु की कोई भूमिका नहीं थी।**



> सके पास हर बात का सही जवाब था और उसने धार्मिक होने का ढोंग किया। इस धोखेबाज़ी से परमेश्वर का कोई लेना-देना नहीं था।

उसने कहा, "पिताजी, मैं आ गया।"
"तू कौन है?"
"मैं एसाव हूँ। वह शिकार का मांस ले आया हूँ जो आप चाहते थे, ताकि आप मुझे आशीर्वाद दें।"
"तुझे यह इतनी जल्दी कैसे मिल गया?"
"केवल इसलिए कि यहोवा ने उसे मेरे सामने पहुँचा दिया!"

तब इसहाक ने याकूब को पास बुलाया, उसे छूकर देखा और कहा, "आवाज़ तो याकूब की है, लेकिन हाथ एसाव के हैं।" इसहाक ने उसके कपड़े भी सूंघे। **हो सकता है उसे कुछ गड़बड़ लगी हो, लेकिन रिबका उसे अच्छी तरह जानती थी और उसने हर बात का पूरा इंतज़ाम कर रखा था।**

तब इसहाक ने खाना खाया और अपने बेटे याकूब को आशीर्वाद दिया। "परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु दे; राज्य-राज्य के लोग तेरे अधीन हों, और देश-देश के लोग तुझे दण्डवत् करें; तू अपने भाइयों का स्वामी हो, और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत् करें। जो तुझे श्राप दें वे आप ही श्रापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएँ।" (उत्पत्ति 27:28-29)

असल में, इसहाक याकूब को वही आशीर्वाद दे रहा हैं जो उन्हें खुद मिला था - वे उसे आगे बढ़ा रहा हैं। **यह वही आशीर्वाद है जो पहले से ही याकूब का था।** परमेश्वर ने उसे पहले ही आशीष दे दी थी। परमेश्वर इस धोखे को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते।

जैसे ही इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया और याकूब कमरे से बाहर निकला ही था कि एसाव शिकार करके लौट आया। उसने मांस पकाया और अपने पिता के पास ले आया। **उसे यह समझने में ज़रा भी देर नहीं लगी कि उसके साथ धोखा हुआ है।** इसहाक यह सोचकर भावनाओं से भर गया कि उन्हें किस तरह इस साज़िश में फँसाया गया था।

और जब एसाव को पता चला कि क्या हुआ है, तो वह चिल्लाया, "मुझे भी आशीर्वाद दे!" लेकिन इसहाक ने कहा, "नहीं, उसने तेरा आशीर्वाद ले लिया है।" एसाव ने माना, "तूने उसका नाम सही रखा था; **वह हड़पने वाला है।** उसने मेरा आशीर्वाद चुरा लिया।" एसाव के लिए इसहाक की बात भविष्यद्वाणी जैसी थी, "तू तलवार के बल पर जियेगा, और अपने भाई की सेवा करेगा।" (उत्पत्ति 27:40)

याकूब का जन्मसिद्ध अधिकार पाने का तरीका बहुत बुरा था। जन्मसिद्ध अधिकार तो पहले से ही उसका था! उसके पिता का आशीर्वाद देने की औपचारिकता की कोई ज़रूरत नहीं थी। **परमेश्वर ने उसके धोखे और चालाकी** को वैसे ही मंज़ूरी नहीं दी, जैसे उन्होंने सारा और अब्राहम की हाजरा और इश्माएल वाली योजना को मंज़ूरी नहीं दी थी। अब्राहम ने इसहाक को आशीर्वाद नहीं दिया था - परमेश्वर ने दिया था! और परमेश्वर ने ही याकूब को भी यह आशीर्वाद दिया। **उसकी चालाकी न सिर्फ़ गैर-ज़रूरी थी, बल्कि परमेश्वर इसके लिए उससे हिसाब भी लेने वाले थे।**

भागता हुआ

एसाव याकूब से उसकी हरकत की वजह से **नफ़रत करने लगा** और उसने एक योजना बनाई। उसने सोचा, "हमारा पिता बूढ़ा हो गया हैं और अब ज़्यादा दिन नहीं जियेगा। जैसे ही वह मरेगा, मैं याकूब को मार डालूँगा। मैं उससे छुटकारा पा लूँगा!" वह इसी योजना के बारे में सोचता रहता था और ज़ाहिर है कि उसने दूसरों से भी इस बारे में बात की होगी। जब यह बात रिबका को पता चली, तो उसने फिर से योजना बनाना शुरू कर दिया। उसने याकूब से कहा, **"तुझे घर छोड़ना होगा।" उसे यह नहीं पता था कि इस पाप में अपनी भूमिका के लिए उसे भी कीमत चुकानी पड़ेगी।**

उसकी योजना थी कि याकूब **हारान में** उसके भाई **लाबान** के पास चला जाए। "जब तक एसाव शांत नहीं हो जाता, तब तक उसे कुछ समय के लिए छिपकर रहने दो।" लेकिन जो कुछ दिनों की बात थी, वह 20 साल तक खिंच गई।

रिबका ने इसहाक को मना लिया कि याकूब को हारान जाकर पत्नी ढूँढ़नी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम के नौकर ने उसके लिए पत्नी ढूँढ़ी थी। **एसाव की कनानी पत्नियों ने इसहाक और रिबका की ज़िंदगी मुश्किल कर दी थी।** याकूब को कनान देश से बाहर निकलकर अपने परिवार में से ही परमेश्वर से डरने वाली पत्नी ढूँढ़ने की ज़रूरत थी, वरना शायद वह भी वही गलती कर बैठता।

यह याकूब को खतरे से दूर ले जाने और उसके लिए पत्नी खोजने का एक बेहतरीन बहाना था। वह याकूब को अपने परिवार और अपने भाई लाबान के पास वापस जाने के लिए मना लेती है। **दुख की बात है कि याकूब से दोबारा मिलने से पहले ही उसकी मौत हो जाती है।**



परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 27 से हमारे लिए सीख

परमेश्वर की प्रभुता बनी रहती है, लेकिन वह अपने बच्चों के शारीरिक कामों के लिए उन्हें अनुशासित करता है।



- **सत्य:** याकूब की चालाकी पूरी तरह छल थी, जिसे परमेश्वर ने स्वीकार नहीं किया। परमेश्वर के निर्णय के अनुसार आशीर्वाद पहले से ही याकूब का था; इसलिए उसके लिए धोखा देने की कोई आवश्यकता नहीं थी। फिर भी परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, परन्तु उसके परिणामस्वरूप हुए वनवास और परीक्षाओं के द्वारा उसने याकूब को अनुशासित किया।



- **नए नियम से संबंध:** इब्रानियों 12 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर उन्हें अनुशासन करता है जिनसे वह प्रेम करता है। प्रभु हमारे जीवन में परीक्षाएँ आने देता हैं ताकि हम मज़बूत बनें, हमें हिम्मत मिले, और हमारा धोखेबाज़ स्वभाव सुधरे, ताकि हम परमेश्वर के लिए मज़बूती से खड़े रह सकें।

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

चालाकी का जाल: अपनी ज़िंदगी में आप अभी कहाँ परमेश्वर के वादों को पूरा करने में उनकी "मदद" करने के लिए अपनी चालाकी, कंट्रोल या धोखे का इस्तेमाल कर रहे हैं, जैसा रिबेका और याकूब ने किया था?

सवाल 2

विश्वास के साथ जीना: सच्चा विश्वास पूरी तरह से परमेश्वर के कहे हुए वचनों पर टिका होता है। मसीह के ज़रिए परमेश्वर ने आपको कौन-से वादे किए हैं, जिनसे आपको यह भरोसा मिलता है कि आप अपनी योजनाएँ बनाने के बजाय परमेश्वर की योजना पर भरोसा कर सकें?


याकूब का सपना
उत्पत्ति 28

याकूब का सपना

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 28
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 28

प्रिय परमेश्वर,

जब हम आपकी उपस्थिति में इकट्ठा होते हैं, तो हमारी आँखें खोलें ताकि हम देख सकें कि मसीह ही आप तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है। हमारी सहायता कीजिए कि हम अपने सौदे और शर्तें छोड़ दें, और पूरी तरह आपकी अनुग्रह और दया पर विश्राम करें। हमें प्रेम से आपकी सेवा करना सिखाइए।

आमीन।

याकूब का घर छोड़ना

उत्पत्ति 28

जब याकूब जाने की तैयारी करता है, तो इसहाक उसे आशीर्वाद देकर और **कनान की किसी स्त्री** से विवाह न करने का आदेश देकर विदा करता है। पूरे पुराने नियम में हम देखते हैं कि **परमेश्वर नहीं चाहते कि भक्त लोग अधर्मियों से विवाह करें। ऐसे विवाह अंततः परमेश्वर से दूर ले जाते हैं।**

> "सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुझे आशीष दे, और फलवन्त करके बढ़ाए, और तू राज्य-राज्य की मण्डली का मूल हो। वह तुझे और तेरे वंश को भी अब्राहम की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था, उसका अधिकारी हो जाए।" उत्पत्ति 28:3-4

इसहाक समझता है कि **परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष दी थी,** और वह आशीष अब उस तक पहुँच चुकी है, और **अब यह आशीष उसके पुत्र याकूब को दी जानी थी।** तब इसहाक याकूब को अपने साले लाबान (रिबका के भाई) के पास भेजता है। यह परिवार अरामी था। कभी-कभी यह प्रश्न पूछा जाता है, **"क्या अब्राहम यहूदी था? क्या वह इस्राएली था?" नहीं, अभी नहीं।**

जल्द ही परमेश्वर **याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखेगा।** उसके बारह पुत्र इस्राएली कहलाए। यह वंश अब्राहम से चला। **वह इस जाति का पिता था, परन्तु उस समय तक उसे यहूदी नहीं कहा जाता था।**

हम यह भी सीखते हैं कि जब एसाव ने देखा कि उसके पिता कनानियों के साथ शादी-ब्याह करने से कितनी नफ़रत करते थे, **तो उसने इश्माएल की बेटी से शादी कर ली, यह सोचकर कि इससे उसके पिता खुश होंगे। लेकिन उसमें आत्मिक समझ बिल्कुल भी नहीं थी,** क्योंकि इश्माएलियों को भी कनानियों या पलिश्तियों की तरह ही ठुकरा दिया गया था।



याकूब की सीढ़ी

यात्रा के पहले ही दिन याकूब ने लगभग 40 मील की दूरी तय की। वह एसाव से दूर निकल जाने के लिए तेज़ी से और लंबी यात्रा करता रहा। रात होने पर वह बेतेल नामक स्थान पर रुका, जिसका अर्थ है, "परमेश्वर का घर।"

आपको क्या लगता है, उस रात उसे कैसा महसूस हो रहा होगा? शायद वह अकेला और घर से दूर होने की वजह से उदास महसूस कर रहा होगा। जहाँ तक हमें पता है, **यह घर से दूर उसकी पहली रात थी** और वह पहली बार अकेले बाहर निकला था।

वह लेट जाता है और **पत्थर को तकिए की तरह** इस्तेमाल करता है। बेतेल पहाड़ियों के बीच एक उदास जगह थी, जहाँ बड़ी-बड़ी, बिना हरियाली वाली चट्टानें दिखाई देती थीं। वहाँ का नज़ारा वीरान और कठोर लगता था। फिर भी, यही वह जगह थी जो याकूब के आत्मिक जीवन का सबसे अहम मोड़ साबित हुई, चाहे उस समय की बात हो या बाद की। तो, यहीं वह सोने के लिए लेटा था।

तब याकूब ने एक सीढ़ी का सपना देखा, जो ज़मीन पर टिकी थी और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँच रहा था। परमेश्वर के स्वर्गदूत उस पर ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। और यहोवा सीढ़ी के सबसे ऊपरी सिरे पर खड़े थे और उन्होंने कहा,

"मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझको और तेरे वंश को दूँगा। और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा: तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। और सुन, मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझको न छोड़ूँगा।" (उत्पत्ति 28:13-15)

यह वही जगह है जहाँ अब्राहम के उस देश में आने के बाद **परमेश्वर सबसे पहले उसे दिखाई दिया था**। अब परमेश्वर **याकूब को भी वही वादा कर रहा हैं।** परमेश्वर ने इस वादे को **इसहाक के सामने भी दोहराया था,** और अब **वे पक्का कर रहा हैं कि वे याकूब के लिए भी ऐसा ही करेंगा।**

एक **अकेले, घर की याद में डूबे उस नौजवान** के लिए **यह नज़ारा कितना बड़ा तोहफ़ा था,** जिसे जल्दबाज़ी में अपना घर छोड़ना पड़ा था। वह एक **दूर देश जा रहा था,** और **उस पहली रात** ही परमेश्वर ने उससे कहा, **"याकूब, मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे वापस इसी भूमि पर ले आऊँगा।"**


"मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू
जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा।"
उत्पत्ति 28:15

मसीह:
सीढ़ी का दर्शन

सीढ़ी के इस दर्शन का क्या अर्थ था? प्रभु यीशु ने इसका अर्थ तब समझाया जब उन्होंने नतनएल को अपना चेला बनाया।

> "यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैंने जो तुझ से कहा, कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसलिए विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े-बड़े काम देखेगा।" फिर उससे कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे।" (यूहन्ना 1:50-51)

वह सीढ़ी और कोई नहीं, बल्कि खुद मसीह हैं। स्वर्गदूत 'मनुष्य के पुत्र' पर ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। स्वर्गदूत उनकी सेवा करते थे; वे उनके आदेश पर काम करते थे। नतनएल बाद में उसी सीढ़ी के ऊपर से परमेश्वर की आवाज़ सुनेगा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ" (मत्ती 3:17)। हम सीधे पिता के पास नहीं जा सकते, लेकिन मसीह के ज़रिए हम पिता तक पहुँच सकते हैं।

> "यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" यूहन्ना (14:6)

प्रभु यीशु मसीह स्वयं ही वह सीढ़ी हैं; ऐसी सीढ़ी नहीं जिस पर हम चढ़ सकें, बल्कि ऐसी जिस पर हम भरोसा कर सकें।

यह सच सबसे पहले याकूब को बताया गया था, जो धोखे से अधिकार हथियाने वाला था। नतनएल के बारे में हमारे प्रभु ने कहा, "देखो, यह सचमुच एक इस्राएली है, जिसमें कोई छल-कपट नहीं है।" (यूहन्ना 1:47) इसका मतलब है कि वह याकूब की तरह धोखेबाज़ नहीं है। **परमेश्वर याकूब के साथ व्यवहार करेंगे। उसने याकूब को यह अद्भुत और महिमामय प्रतिज्ञा दी है। परन्तु याकूब को अभी बहुत कुछ सीखना है!**

क्या आज हम सभी के साथ ऐसा ही नहीं है? इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि परमेश्वर को हमें सिखाना चाहता है। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि परमेश्वर को हमें अनुशासित करना पड़ता है। **उन्होंने अब्राहम के साथ ऐसा किया, और इसहाक के साथ भी। वे याकूब के साथ भी ऐसा ही करने जा रहे हैं। अब तक, सब कुछ याकूब की मर्ज़ी के मुताबिक हो रहा था।** लेकिन अब प्रभु याकूब को अनुशासित करने के लिए उस पर एक परीक्षा आने देते हैं। **परीक्षाएँ हमारे चरित्र को मज़बूत करती हैं; वे हमारे जीवन में साहस भरती हैं और हमें परमेश्वर के पक्ष में खड़े होने के काबिल बनाती हैं।**



"वह सीढ़ी कोई और नहीं बल्कि स्वयं मसीह है, ऐसी सीढ़ी नहीं जिस पर हम चढ़ सकते हैं, बल्कि वह सीढ़ी है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं."

याकूब ने परमेश्वर की उपस्थिति को पहचाना

"तब याकूब जाग उठा, और कहने लगा, "निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न

जानता था।"यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।"(उत्पत्ति 28:16-17)

जब याकूब घर से भागा, तो परमेश्वर के बारे में उसकी सोच सीमित थी। उसे लगा कि घर से भागने पर वह परमेश्वर से भी दूर भाग रहा है। लेकिन परमेश्वर ने उसे याद दिलाया कि उन्होंने उसे छोड़ा नहीं था। उन्होंने याकूब के साथ रहने का वादा किया।

सुबह उठकर याकूब ने सबसे पहले उस पत्थर को उठाया जिसे उसने तकिये की तरह इस्तेमाल किया था, उसे एक खंभे की तरह खड़ा किया और उसके ऊपर तेल डाला।"याकूब ने यह मन्नत मानी, "यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहनने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊँ; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा।"(उत्पत्ति 28:20-21)

परमेश्वर के साथ याकूब का लेन-देन वाला समझौता

याकूब को अभी बहुत कुछ सीखना है। **वह परमेश्वर के साथ सौदा करना चाहता है।** वह कहता है, "हे परमेश्वर, यदि आप मेरे लिए ऐसा करेंगे, तो मैं आपकी सेवा करूँगा।**" लेकिन परमेश्वर ने उसे पहले ही बता दिया है कि वह उसके लिए ये सभी काम करने जा रहे हैं,** "मैं तेरी रक्षा करूँगा; मैं तुझे इस देश में वापस लाऊँगा; मैं तुझे यह देश दूँगा; और मैं तुझे संतान दूँगा।"

याकूब परमेश्वर से मोल-भाव करना चाहता है, लेकिन परमेश्वर हममें से किसी के साथ भी इस तरह का लेन-देन नहीं करते। अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो याकूब कभी उस भूमि पर वापस नहीं लौट पाता।

परमेश्वर की कृपा और दया

परमेश्वर ने अपनी कृपा और दया से उसे उस देश में वापस पहुँचाया। **जब कई सालों बाद याकूब बेतेल लौटा, तो वह पहले से कहीं ज़्यादा समझदार इंसान बन चुका था।** तभी वह परमेश्वर की दया के लिए उनकी आराधना और स्तुति करने के लिए लौटा।

आज भी, बहुत से लोग कहते हैं कि अगर परमेश्वर कोई खास काम करेगा, तो वे उसकी सेवा करेंगे। लेकिन परमेश्वर इस तरह से लेन-देन नहीं करता। **वे आप पर दया करेगा और बिना बदले में कुछ मांगे आप पर कृपा करेगा।** हालाँकि वे बदले में कुछ नहीं मांगता, लेकिन वह यह ज़रूर कहता हैं कि अगर आप उससे प्यार करते हैं, तो आप सच में उसकी सेवा करना चाहेंगे। यह प्यार का बंधन होगा।

यह वैसा ही प्यार है जैसा एक माँ का अपने छोटे बच्चे के प्रति होता है। वह उसे आशीर्वाद देना चाहती है। इसी तरह से परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रेम करें। वह केवल मसीह में विश्वास के द्वारा तुम्हारा पिता बनना चाहता है।



> “परमेश्वर केवल मसीह में विश्वास के द्वारा तुम्हारा पिता बनना चाहता है।”

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 28 से हमारे लिए सीख

1 यीशु मसीह ही परमेश्वर पिता तक पहुँचने का हमारा सीधा ज़रिया हैं।

- **सत्य:** याकूब ने जो सीढ़ी स्वर्ग तक जाती हुई देखी थी, वह सिर्फ़ एक सपना नहीं थी; वह मसीह की एक तस्वीर थी। हम अपनी कोशिशों से परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकते, लेकिन परमेश्वर ने हमारे पास आने का एक रास्ता बनाया।

- **नए नियम से संबंध:** नए नियम में यीशु ने साफ़ तौर पर याकूब के सपने का मतलब समझाया था। उन्होंने नतनएल से कहा, "कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे।"(यूहन्ना 1:51)। "यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।"(यूहन्ना 14:6)। **मसीह ही वह सीढ़ी हैं - ऐसी सीढ़ी नहीं जिस पर हम चढ़ते हैं, बल्कि ऐसी जिस पर भरोसा करके हम स्वर्ग पहुँचते हैं।**

2 परमेश्वर लेन-देन या सौदेबाज़ी के आधार पर नहीं, अपनी असीम कृपा से काम करते हैं।

- **सत्य:** याकूब ने परमेश्वर के साथ सौदा करने की कोशिश की; उसने वादा किया कि अगर परमेश्वर उसे खाना, कपड़े और सुरक्षा देगा, तो वह उसकी सेवा करेगा। परन्तु परमेश्वर तो पहले ही बिना किसी शर्त के यह सब करने की प्रतिज्ञा कर चुका था। परमेश्वर हमारे साथ लेन-देन के आधार पर व्यवहार नहीं करता, बल्कि अपने अनुग्रह और दया के द्वारा हमें अपनी प्रतिज्ञाओं में सहभागी बनाता है।

- **नए नियम से संबंध:** उद्धार अनुग्रह का सुसमाचार है, जो हमें मसीह के द्वारा बिना मूल्य दिया गया है (इफिसियों 2:8–9)। परमेश्वर बिना बदले में कुछ माँगे हम पर दया करता है, क्योंकि मसीह हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले चुका है। इसलिए उसकी सेवा करना हमारे लिए केवल प्रेम का बंधन होना चाहिए उस अनुग्रह का उत्तर, जो हमें मसीह में विश्वास के द्वारा पहले ही मुफ़्त में मिल चुकी है।

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

अनुशासन का मकसद: अपनी ज़िंदगी के किसी मुश्किल दौर या "निर्वासन" (मुश्किल हालात) के बारे में सोचिए। परमेश्वर ने उस स्थिति का इस्तेमाल आपको अनुशासित करने, आपके धोखे को दूर करने और आपके चरित्र को मज़बूत करने के लिए कैसे किया होगा?

सवाल 2

सीढ़ी में विश्राम: यीशु वह सीढ़ी हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ती है। क्या आपने अपने पापों से पूरी तरह छुटकारा पाने के लिए यीशु पर भरोसा किया है? क्या आपकी आत्मा यीशु मसीह के पूरे हो चुके काम पर पूरा भरोसा करके 100% विश्राम पा रही है?

सवाल 3

प्रेम से सेवा करना: परमेश्वर चाहते हैं कि उनकी आज्ञा मानना किसी लेन-देन जैसा न होकर "प्रेम का बंधन" हो। आप प्रभु के साथ अपने रिश्ते को कैसे बताएंगे? क्या यह लेन-देन जैसा है, या आप अपनी ज़िंदगी में उनके प्यार और मार्गदर्शन को किस तरह महसूस कर रहे हैं?

सुसमाचार

मसीह

स्वर्ग तक पहुँचने की सच्ची सीढ़ी

1 **दर्शन का प्रकाशन:** इस पाठ में हमने याकूब के उस स्वप्न के बारे में सीखा, जिसमें एक सीढ़ी स्वर्ग तक पहुँची हुई थी। इस दर्शन का वास्तविक अर्थ तब तक प्रकट नहीं हुआ, जब तक प्रभु यीशु ने अपने शिष्य नतनएल को बुलाते समय इसकी व्याख्या नहीं की। यीशु ने उससे कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे।"(यूहन्ना 1:50–51)

2 **मसीह ही वह संबंध हैं:** पुराने नियम की इस घटना को खुद पर लागू करते हुए, यीशु ने यह महान सुसमाचार प्रकट किया कि **वह सीढ़ी कोई और नहीं, बल्कि स्वयं मसीह हैं।** पवित्र परमेश्वर और पापी इंसानों के बीच की असीम दूरी को जोड़ने वाले वे ही एकमात्र मध्यस्थ हैं। इसके अलावा, 'मनुष्य के पुत्र' पर स्वर्गदूतों का ऊपर नीचे आना जाना यह दिखाता है कि वे सक्रिय रूप से उनकी सेवा करते थे और उनके सर्वोच्च आदेश का पालन करते थे।

3 **पिता की पुष्टि:** याकूब के मूल सपने में, प्रभु सीढ़ी के सबसे ऊपरी सिरे पर खड़े थे। नए नियम में, हम परमेश्वर पिता की आवाज़ सुनते हैं जो उसी सीढ़ी के ऊपर से यीशु की पुष्टि करते हुए कहते हैं, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ" (मत्ती 3:17)। मसीह को पिता की पूर्ण स्वीकृति और सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

4 **सुसमाचार की विशिष्टता:** इंसान की बुनियादी समस्या परमेश्वर से अलग होना है। मसीह यह स्पष्ट करते हैं कि हम सीधे पिता के पास नहीं जा सकते; हम तक पहुँचने का एकमात्र ज़रिया मसीह ही हैं। यीशु स्वर्ग जाने के किसी दूसरे रास्ते की गुंजाइश नहीं छोड़ते और साफ़ तौर पर कहते हैं, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)।

5 **मुख्य बात:** हमारे उद्धार के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इस सीढ़ी के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। धर्म लोगों से कहता है कि वे कड़ी मेहनत करें और परमेश्वर की कृपा पाने के लिए ऊपर की ओर "चढ़ें"। लेकिन, परमेश्वर कहते हैं कि **प्रभु यीशु मसीह ही वह सीढ़ी है ऐसी सीढ़ी नहीं जिस पर हम चढ़ सकें, बल्कि ऐसी जिस पर भरोसा करके हम मुक्ति पा सकते हैं।**

हम स्वर्ग पहुँचने की अपनी कड़ी कोशिशों से नहीं, बल्कि उस पर पूरा **भरोसा करके बचाए जाते हैं जो हमें बचाने के लिए स्वर्ग से नीचे आया था**। यीशु ने क्रूस पर आपके पापों की सज़ा भुगती, आपके लिए मरे, और **तीसरे दिन फिर जी उठे ताकि आपको बेगुनाह ठहरा सकें और आपके पापों को माफ़ कर सकें; और यीशु (हमारी सीढ़ी) के ज़रिए,** वह हमें घर यानी स्वर्ग में परमेश्वर के करीब ले जाएँगे।


याकूब का विवाह
उत्पत्ति 29:1-30

याकूब का विवाह

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 29:1-30
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 29:1-30

प्रिय परमेश्वर,

जब हम आपके वचन का अध्ययन करते हैं, तो हमारी आँखें खोलें ताकि हम देख सकें कि हम किस तरह खुद को और दूसरों को धोखा देते हैं। हमें यह समझने में मदद करें कि हम जैसा बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। हमें आपकी ताड़ना को स्वीकार करने की नम्रता और आपके सामने सच्चाई से चलने की बुद्धि प्रदान कीजिए।
आमीन।

जाने का समय

उत्पत्ति 29:1-30

अब तक **याकूब ने अपने जीवन में घमण्ड, चतुराई और छल के सहारे आगे बढ़ना सीखा था।** वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए किसी भी बेईमान तरीके का सहारा लेने से नहीं हिचकिचाता था, और उसे इस पर घमण्ड भी था। **परन्तु अब उसे वही काटना था जो उसने बोया था।** याकूब अब बेतेल छोड़ने के लिए तैयार था—वही स्थान जहाँ **उसने यीशु मसीह को स्वर्ग तक पहुँचने वाली सीढ़ी के रूप में दर्शन में देखा था।** उसने अपनी यात्रा फिर से आरम्भ की और कुछ समय बाद हारान पहुँच गया।

सबसे पहले उसने एक कुआँ देखा जिसके मुँह पर **एक पत्थर रखा हुआ था।** इस कुएँ का पानी इतना ज़रूरी था कि उसे पत्थर से ढककर सुरक्षित रखा जाता था। दिन में एक खास समय पर कुएँ के ऊपर से पत्थर हटा दिया जाता था और **फिर सब लोग अपनी भेड़ों को पानी पिलाते थे।** जब सबको ज़रूरत के हिसाब से पानी मिल जाता, तो कुएँ को बंद करने के लिए पत्थर को वापस उसकी जगह पर रख दिया जाता था।

जब याकूब वहाँ पहुँचा, तो पत्थर अपनी जगह पर ही था। **उसने सबसे पहले पूछा, "हम कहाँ हैं?" जब उन्होंने जवाब दिया, "हारान," तो उसने पूछा कि क्या कोई नाहोर के बेटे लाबान को जानता है। "हाँ, वह उसकी बेटी राहेल है, जो अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।"**

जब वे बातें कर रहे थे, तभी राहेल अपने झुंड के साथ वहाँ पहुँची। याकूब ने जैसे ही उसे देखा, उसने **कुएँ पर रखा पत्थर हटाया और उसके झुंड को पानी पिलाया।** किसी ने उससे राहेल के झुंड को पानी पिलाने के लिए नहीं कहा था, फिर भी उसने ऐसा किया। याकूब ने अपनी ज़िंदगी के शुरुआती दौर में अपने नियम खुद बनाए थे। अब वह एक बहुत बड़ा सबक सीखने वाला था, और यह सबक उसे उसके मामा लाबान सिखाने वाले थे।



याकूब की बोई फसल काटने का समय

जब वह अपनी रिश्तेदार राहेल से मिलता है, तो उसे चूमता है और भावनाओं से भर जाता है **और खुशी के मारे रोने लगता है। याकूब उसके पिता का भांजा है, यानी रिबका का बेटा, जो उसके पिता की बहन थी।** जब लाबान ने यह अच्छी खबर सुनी, तो वह याकूब से मिलने के लिए बाहर भागा, उसे गले लगाया और चूमा, और उसे घर के अंदर ले आया। याकूब ने शायद रात के खाने पर उन्हें अपनी यात्रा के किस्से सुनाए होंगे **कैसे उसने अपने भाई को धोखा देकर** अपना जन्मसिद्ध अधिकार हासिल किया **और कैसे चालाकी से आशीर्वाद पाया।**

लाबान को अब यकीन हो गया था कि यह उसका भांजा है, और उसने कहा, **"तू मेरा रिश्तेदार है, इसलिए अंदर आ और इसे अपना ही घर समझ।"** फिर एक महीना बीत गया। दूर देश से आए भांजे के तौर पर, याकूब कोई काम नहीं कर रहा था। वह शायद राहेल के साथ भी समय बिता रहा था। एक सुबह, लाबान ने याकूब से कहा, **"सुन, मैं नहीं चाहता कि तू मेरे लिए बिना किसी फ़ायदे के काम करे, इसलिए चल समझौता करते हैं।" अब लाबान अपने भांजे के साथ व्यवहार करने वाला था।**

हम सीखते हैं कि लाबान की दो बेटियाँ थीं: बड़ी बेटी का नाम लिया था और छोटी का राहेल। **वह जानता था कि याकूब राहेल को पसंद करता है, क्योंकि वह सुंदर और प्यारी थी। लेकिन लिया वैसी नहीं थी।** जब लाबान ने याकूब से पूछा कि उसकी मज़दूरी क्या होनी चाहिए, तो याकूब ने कहा कि वह राहेल के लिए सात साल तक काम करने को तैयार है। लाबान ने यह सौदा मान लिया।

याकूब ने धोखे का दर्द महसूस किया

अतः याकूब ने राहेल के लिये सात वर्ष सेवा की; और वे उसको **राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े"**(उत्पत्ति 29:20)। याकूब की ज़िंदगी के शुरुआती सालों में, किसी भी सुंदर या सम्मानजनक चीज़ की एकमात्र झलक राहेल के लिए उसका प्यार ही था। अब जब सात साल की मेहनत पूरी हो गई थी, तो याकूब राहेल से शादी करने के लिए बेताब था। इसलिए, लाबान ने सभी आदमियों को इकट्ठा किया और एक दावत दी। **और शाम को, लाबान अपनी बेटी लिया को याकूब के पास ले आया।** उन दिनों, शादी की रस्म में दुल्हन का चेहरा घूंघट से पूरी तरह ढका होता था, इसलिए उसे देखा नहीं जा सकता था। बेचारे याकूब को अगली सुबह तक पता ही नहीं चला कि वह किस लड़की से शादी कर रहा है। **और वह राहेल नहीं थी - वह लिया थी! याकूब गुस्से में लाबान के पास गया और पूछा, "तुमने मेरे साथ यह क्या किया है? मैंने राहेल के लिए तुम्हारी सेवा की थी। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"**

लाबान ने उसकी आपत्ति को यह कहकर टाल कर दिया, **"हमारे यहाँ बड़े बच्चे से पहले छोटे बच्चे की शादी करने का रिवाज नहीं है।"** यह एक ऐसी शर्त थी जिसके बारे में बताना वह याकूब को भूल गया था।

जब याकूब को पता चला कि उसके साथ धोखा हुआ है, तो क्या उसे याद आया कि उसने भी कभी बड़े भाई का होने का नाटक किया था? उसे घर इसलिए छोड़ना पड़ा था क्योंकि उसने अपने पिता को धोखा दिया था। अब याकूब को लगा कि उसे छोटी बहन मिलेगी, लेकिन उसे बड़ी बहन मिल गई। बाज़ी पलट गई थी, और याकूब के लिए यह एक दुखद दिन था।

परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेना

लेकिन लाबान **अपने लेन-देन में "उदार" बनना चाहता था, इसलिए उसने एक प्रस्ताव रखा:** सात साल और काम करो, और तुम्हें राहेल मिल जाएगी। इसका मतलब था कि याकूब की दो पत्नियाँ हो जाएँगी—एक ऐसा काम जो उसे नहीं करना चाहिए था। आगे चलकर उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ने वाला था। **इसलिए याकूब ने सात साल और सेवा की और राहेल को अपनी पत्नी बना लिया।**

कुछ लोगों ने पूछा है: **"क्या परमेश्वर एक से ज़्यादा पत्नियाँ रखने को सही मानते हैं?"** नहीं, बाइबल में लिखी हर बात को परमेश्वर सही नहीं मानते। लेकिन बाइबल इतिहास की सच्चाई बताती है। **याकूब की दो पत्नियाँ थीं, और ऐसा इस तरह हुआ। याकूब के परिवार में बहुत परेशानियाँ आईं, और इन सबकी जड़ यही थी कि वह अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए अपने ही तरीके अपनाता** था।



> "याकूब अपनी चतुराई के भरोसे जीवन जीता था। वह घमण्डी और चालाक था, और धोखेबाज़ी में माहिर हो गया था परन्तु अब उसे वही काटना था जो उसने बोया था।"

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 29 से हमारे लिए सीख

बोने और काटने का सिद्धांत:

- **सत्य:** इस कहानी का मुख्य सच यह है कि **"मनुष्य जो कुछ बोता है,** वही काटेगा ।" (गलातियों 6:7)। याकूब ने अपनी शुरुआती ज़िंदगी अपने पिता का आशीर्वाद और अपने भाई का जन्मसिद्ध अधिकार पाने के लिए धोखेबाज़ी और बेईमानी के तरीकों का इस्तेमाल करते हुए बिताई। क्योंकि उसने धोखा बोया था, इसलिए उसे धोखा ही मिला: उसके मामा लाबान ने उसे धोखा देकर राहेल के बजाय उसकी बड़ी बहन लियाह से शादी करवा दी। **परमेश्वर ने याकूब को धोखा मिलने का दर्द सहने दिया ताकि उसे सुधारा जा सके, जिससे उसने अपने पिछले पापों के बारे में सोचा। यह एक बुनियादी और हमेशा सच रहने वाली बात है जो सभी पीढ़ियों पर लागू होती है।**



- **नए नियम से संबंध: गलातियों 6:7 धोखा न खाओ, परमेश्वर उपहास में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।"**



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

बोने और काटने के बारे में सोचें: क्या मेरी ज़िंदगी में ऐसे कुछ पहलू हैं जहाँ मैंने अपने लक्ष्य पूरे करने के लिए बेईमानी के तरीकों का इस्तेमाल किया है या "अपनी मर्ज़ी से नियम बनाए हैं" - ठीक वैसे ही जैसे याकूब ने किया था? मेरी मौजूदा मुश्किलें क्या उन कामों का नतीजा हो सकती हैं जो मैंने पहले किए थे?

सवाल 2

व्यवहार बदलना: वह कौन-सी एक "चतुर" या धोखे वाली आदत है जिसे मुझे आज अंगीकार करके छोड़ देना चाहिए, ताकि मुझे कड़वी फसल न काटनी पड़े?

सवाल 3

ईमानदारी से खुद की जाँच: याकूब ने अपने पिता को धोखा दिया था, और लाबान ने उसे वही धोखा वापस दिखाया। पवित्र आत्मा से पूछें कि क्या कोई ऐसी बात है जिसमें आप अभी दूसरों को या खुद को धोखा दे रहे हैं। परमेश्वर के सामने ईमानदारी से चलने के लिए आप इस हफ़्ते क्या कदम उठा सकते हैं?


याकूब का परिवार
उत्पत्ति 29:30 - 31:6

याकूब का परिवार

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 29:30 - 31:6
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 29:30 - 31:6

प्रिय परमेश्वर,

आपका धन्यवाद कि आपकी कृपा हमारे प्रयासों से कहीं बढ़कर है। हमें यह समझने में मदद करें कि हमारे पास जो कुछ भी अच्छा है, वह आपकी ओर से है, न कि हमारी अपनी चतुराई से। हमें सिखाएं कि हम खुद को पूरी तरह आपके हाथों में सौंप दें और अपनी योजनाओं के बजाय आपकी दी हुई व्यवस्था पर भरोसा करें।

आमीन।

याकूब के पुत्र

उत्पत्ति 29:30 - 31:6

चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, यह छोटा-सा परिवार बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण परिवारों में से एक बनने वाला था। **इन्हीं दो महिलाओं और उनकी दासियों से इस्राएल के 12 बेटे** (और आगे चलकर 12 गोत्र) पैदा होंगे। याकूब की पहली पत्नी, लिया, दुखी है क्योंकि वह जानती है कि याकूब उससे प्यार नहीं करता। उसे उम्मीद थी कि जब उसका पहला बेटा रूबेन पैदा होगा, तो याकूब का प्यार उसकी ओर मुड़ जाएगा। लेकिन वह सिर्फ़ राहेल से ही प्यार करता रहा।

रूबेन याकूब का पहिलौठा पुत्र था, परन्तु मसीह तक पहुँचने वाला वंश उसके द्वारा नहीं चला। **बल्कि, यह लिया का चौथा बेटा, यहूदा था, जिससे राजाओं की वंशावली शुरू हुई।** इसी वंशावली से दाऊद और बाद में स्वयं प्रभु यीशु आए। याजकीय गोत्र लेवी, लिआ के पुत्र, से आया। **याकूब लिआ से प्रेम नहीं करता था, फिर भी परमेश्वर ने उसे सम्मान दिया कि वह याकूब के कुछ सबसे महत्वपूर्ण पुत्रों की माता बनी।**



याकूब लिआ से प्रेम नहीं करता था, फिर भी परमेश्वर ने उसे यह सम्मान दिया कि वह याकूब के कुछ महान पुत्रों की माता बने।

इस बीच, राहेल गर्भवती नहीं हो पा रही थी। इससे वह लगभग निराश हो गई थी। **उन दिनों, अगर किसी महिला की कोई संतान नहीं होती थी, तो उसे अपमानित होना पड़ता था।** जितने ज़्यादा बच्चे होते थे, उसकी स्थिति उतनी ही बेहतर मानी जाती थी।

याकूब राहेल की निराशा से परेशान था, उसे लगा कि उसका प्यार उसके लिए काफी होना चाहिए। **लेकिन राहेल ने सुझाव दिया, जैसा सारा ने कई पीढ़ियों पहले किया था, कि याकूब उसकी दासी से बच्चे पैदा करे।** (परमेश्वर ने तब इसे स्वीकार नहीं किया था; वह अब भी इसे स्वीकार नहीं करता।) निश्चय ही, इस कदम से केवल परेशानी ही उत्पन्न हुई।

याकूब का घर बच्चों से भरता जा रहा था। राहेल की दासी से दो बेटे हुए, लेआह की दासी से दो बेटे हुए, और फिर लेआह के भी दो बेटे हुए।

फिर **"परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली...उसकी कोख खोली।"** (उत्पत्ति 30:22)।
उसका एक बेटा हुआ और उसने **उसका नाम यूसुफ़ रखा।** बाद में उसने **बिन्यामीन** को भी जन्म दिया।

याकूब के कुल बारह बेटे थे - उन्हीं से इस्राएल के बारह गोत्र बने और अंततः इस्राएल राष्ट्र का निर्माण हुआ।

यहाँ याकूब के बच्चों की सूची है।

लिआ से जन्मे	**बिल्हा से जन्मे, राहेल की दासी**	**जिल्पा से जन्मे, लिया की दासी**	**राहेल से जन्मे**
1. रूबेन 2. शिमोन 3. लेवी 4. यहूदा 5. इस्साकार 6. जबूलून 7. दीना (बेटी)	1. दान 2. नफ्ताली	1. गाद 2. आशेर	1. यूसुफ़ 2. बिन्यामीन

याकूब का परिवार जाने की तैयारी करता है

जब याकूब ने आख़िरकार **लाबान को छोड़कर अपने परिवार के लिए अलग घर बसाने की हिम्मत जुटाई,** तो उसने लाबान से उन्हें जाने देने के लिए कहा। उसने लाबान की काफ़ी समय तक सेवा की थी। लेकिन लाबान अभी उन्हें जाने नहीं देना चाहता था। **उसने देखा था कि कैसे परमेश्वर ने याकूब की वजह से उन्हें और उसे भी आशीष दी थी, और वह उन्हें जाने नहीं देना चाहता था। वह कहता है, "मेरे बेटे, इतनी जल्दी मत जा! तेरी वजह से मुझे आशीष मिली है। क्यों न मैं तेरी मज़दूरी बढ़ा दूँ?"**

याकूब को अब तक यह पता चल गया था कि जब भी मामा लाबान कोई सौदा करते, तो जीत उन्हीं की होती थी। **याकूब ने यह बात समझ ली थी और उसने शिकायत की कि अपनी मेहनत के बदले उसके पास दो पत्नियाँ और लड़कों से भरा घर होने के अलावा और कुछ नहीं है।** वह कहता है, "परमेश्वर ने आप पर कृपा की है और आपको खूब तरक्की दी है, लेकिन मेरे पास कुछ भी नहीं है।" तब लाबान ने कहा, "ठीक है, चल एक सौदा करते हैं।"



लाबान के साथ याकूब की समझदारी भरी बातचीत

हमेशा रणनीति बनाने वाले याकूब ने **उससे कहा कि वह उसे सभी चितकबरी और धब्बेदार गाय-बैल, भूरी भेड़ें और धब्बेदार व चितकबरी बकरियाँ दे दे।** यह काफ़ी भुगतान होगा। दूसरे शब्दों में, शुद्ध नस्ल वाले जानवर लाबान के होंगे, लेकिन अलग नस्ल वाले याकूब के होंगे।

याकूब ने कहा, **"बस ये मुझे दे दो, यही मेरी मज़दूरी होगी।"** लाबान को यह सौदा काफ़ी अच्छा लगा। पशुओं पर लगे निशान से पता चल जाता कि कौन-सा जानवर किसका है। इसलिए लाबान इसके लिए मान गया। **याकूब ने अलग तरह के जानवरों को अलग कर दिया ताकि सिर्फ़ एक ही नस्ल के जानवर आपस में मिलें और बच्चे पैदा करें, और वे बच्चे लाबान के हों।** बाकी जानवर याकूब के हो जाएँगे।

याकूब ने एक दिलचस्प सौदा किया। लाबान ने जानवरों को दो समूहों में बाँट दिया। उसने दोनों झुंडों के बीच तीन दिन की यात्रा जितनी दूरी भी रखी। **लाबान का बेटा एक झुंड की देखभाल करता था और याकूब दूसरे झुंड की। फिर याकूब ने कुछ ऐसा किया जिससे उसे लगा कि उसके झुंड में और ज़्यादा चितकबरी, धब्बेदार या काली भेड़ें और बकरियाँ पैदा होंगी, और इस तरह उसने अपने झुंड को बढ़ाया।**

याकूब के आत्मनिर्भरता के बीच परमेश्वर का अनुग्रह

याकूब **ने समझदारी दिखाई, चाहे वह जानवरों के बारे में उसकी अपनी जानकारी से हो या फिर परमेश्वर से मिली जानकारी से।** हो सकता है कि उसे आनुवंशिकता के नियमों की समझ न रही हो, लेकिन उसने वही किया जो उसे सही लगा, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी। **याकूब समझदार था या बस अंदाज़ा लगा रहा था, उसके युक्ति की सफलता असल में परमेश्वर की ही देन थी।** याकूब बहुत चालाकियाँ करता था, लेकिन परमेश्वर ने उसे उन चालाकियों की वजह से नहीं, बल्कि उनके बावजूद आशीष दी।

परमेश्वर ने याकूब पर आशीष दी और **उसे बहुत समृद्ध बनाया।** उसके पास और भी नौकर, ऊँट और गधे हो गए, साथ ही भेड़ों और बकरियों के बड़े झुंड भी। ऊँट दुर्लभ थे और केवल अमीरों के पास ही होते थे, लेकिन याकूब के पास बहुत सारे ऊँट थे। परमेश्वर ने उसे अपनी मेहनत से अमीर बनने दिया। **अगर याकूब ने खुद को परमेश्वर की देखरेख में सौंपा होता, तो शायद परमेश्वर उसे और भी बहुत कुछ देता।** लेकिन अपनी ज़िंदगी के इस पड़ाव पर, याकूब परमेश्वर के बजाय खुद पर ज़्यादा भरोसा करता था।



“चाहे याकूब समझदार था या अंदाज़ा लगा रहा था, उसके योजना की कामयाबी असल में परमेश्वर की ही देन थी।”

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 30 से हमारे लिए सीख

हमारे आत्मनिर्भर होने के बावजूद परमेश्वर का अनुग्रह काम करता है

याकूब चालाकियों और चतुर युक्तियों से भरा हुआ व्यक्ति था। वह लगातार परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने का प्रयास करता था, जैसे कि झुंडों के प्रजनन के मामले में। परन्तु सत्य यह है कि **परमेश्वर ने याकूब को उसके चालाकियों के कारण नहीं, बल्कि उसके बावजूद आशीष दी। याकूब की असली कामयाबी और दौलत परमेश्वर की वजह से मिली थी, जो उसके अनुग्रह और वादों का नतीजा थी (इफिसियों 2:8-9)**। अगर याकूब खुद पर भरोसा करने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करता, तो शायद परमेश्वर उसे और भी बहुत कुछ देता।



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

आत्मनिर्भरता पर मनन: आपके जीवन में ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जहाँ आप वर्तमान में परमेश्वर की व्यवस्था पर भरोसा करने के बजाय अपनी ही योजनाओं या चालाकियों पर अधिक निर्भर हैं? क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि आपकी सफलता का स्रोत परमेश्वर का अनुग्रह है, या आप अपनी सफलताओं का श्रेय स्वयं को देते हैं?

सवाल 2

अनदेखी विश्वासयोग्यता:लिआ से याकूब प्रेम नहीं करता था, लेकिन परमेश्वर ने उसे बहुत सम्मान दिया। क्या आपकी ज़िंदगी में ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जहाँ आपको लगता है कि आपको नज़रअंदाज़ किया जा रहा है या आपकी कद्र नहीं की जा रही है? लिया की कहानी आपको यह भरोसा रखने के लिए कैसे हिम्मत देती है कि जब लोग विश्वासयोग्यता को नहीं देखते या उसकी कद्र नहीं करते, तब भी परमेश्वर उसे देखता है और उसका सम्मान करता है?

सवाल 3

नियंत्रण को समर्पित करना: आज ऐसी कौन-सी एक विशेष परिस्थिति है जिसमें आपको अपनी सामर्थ्य के भरोसे प्रयास करना छोड़कर स्वयं को पूरी तरह परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, इस विश्वास के साथ कि उसके अनुग्रह के द्वारा की गई व्यवस्था आपके लिए पूरी तरह पर्याप्त होगी?


याकूब का लाबान
को छोड़ कर जाना
उत्पत्ति 31:7-55

याकूब का लाबान को छोड़ कर जाना

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 31:7-55
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 31:7-55

प्रिय परमेश्वर,

हमारे विश्वासयोग्य रक्षक और वादा निभाने वाले होने के लिए आपका धन्यवाद। जब हमें विरोध या अन्यायपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़े, तो हमें स्मरण दिलाइए कि आप हमारे दुःख को देखते हैं और हमारे लिए हस्तक्षेप करेंगे। हमारी सहायता कीजिए कि हम आपके समय पर भरोसा रखें, आपकी आवाज़ का पालन करें, और अपनी सारी शिकायतें आपके हाथों में सौंप दें।

आमीन।

परमेश्वर याकूब से चले जाने को कहते हैं।

उत्पत्ति 31:7-55

याकूब अब समझ गया है कि लाबान के घर का असर उसके बढ़ते परिवार के लिए अच्छा नहीं है। **ये लड़के इस्राएल के 12 गोत्रों के अगुवे बनेंगे, और परमेश्वर उन्हें उस माहौल से निकालकर उस देश में वापस ले जाने का काम कर रहा है जिसका वादा उसने अब्राहम से किया था।**

अंततः परमेश्वर उससे कहते हैं कि अब जाने का समय हो गया है। **"अपने पितरों के देश और अपनी जन्म-भूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूँगा।"**(उत्पत्ति 31:3)। याकूब राहेल और लिया को खेत में मिलने के लिए बुलाता है क्योंकि **उसे घर पर अपनी योजनाओं के बारे में बात करने में डर लगता है कि कहीं कोई उनकी बातें सुन न ले।**

याकूब के झुंड और धन-दौलत के लाबान से ज़्यादा बढ़ जाने के कारण, लाबान का व्यवहार याकूब के प्रति खराब हो गया था। याकूब ने राहेल और लिया को समझाया कि **परमेश्वर ने ही उसे आशीष दी थी,** और इसी वजह से लाबान और उसके बेटे उससे बहुत जलने लगे थे।

याकूब ने लाबान के लिए 20 साल तक कड़ी मेहनत की थी (और लाबान ने याकूब की मज़दूरी दस बार बदली थी!) लेकिन जब वह परेशान और निराश था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, तब परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया।

फिर याकूब ने उन्हें असल वजह बताई कि वह क्यों जाना चाहता था। **उसने अपनी पत्नियों को बताया कि कैसे परमेश्वर ने सपने में उससे बात की थी और समझाया कि उसने पशुओं के प्रजनन को किस प्रकार बढ़ाया।** परमेश्वर ने कहा, **"यह मैंने किया! मैंने देखा कि लाबान तेरे साथ क्या कर रहा था, और मैंने तुझे आशीष दी।"**



परमेश्वर अपने प्रतिज्ञा की याद दिलाते हैं

"मैं उस बेतेल का परमेश्वर हूँ।" परमेश्वर ने याकूब को उस रात की याद दिलाई जब वह घर से भाग रहा था और बेतेल में अपनी पहली रात बिताई थी, उसी रात परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुआ था। **"अब चल, इस देश से निकलकर अपनी जन्म-भूमि को लौट जा।"**
(उत्पत्ति 31:13) परमेश्वर चाहते हैं कि याकूब हारान छोड़ दे, क्योंकि उस समय उसके 11 बेटे बड़े हो रहे थे और मूर्ति-पूजा वाले घर में बुरी आदतें सीखने लगे थे।

राहेल और लिया **ने याकूब के फ़ैसले का समर्थन किया क्योंकि उनके पिता ने उनके साथ भी सही व्यवहार नहीं किया था और शायद उन्हें कोई विरासत भी नहीं मिलती।** उन्होंने याकूब से कहा कि वह जो भी सही समझे, करे और वे उसके साथ खड़ी रहेंगी। **इसलिए याकूब ने जल्दबाजी में जाने की तैयारी की।** याद रखें, इसी तरह वह तब भी घर से निकला था जब वह अपने भाई से बचकर भाग रहा था। अब वह अपने मामा का घर छोड़ रहा था, लेकिन इस बार उसकी कोई गलती नहीं थी।

परिवार का धोखा और परमेश्वर का हस्तक्षेप

याकूब को यह नहीं पता था कि राहेल ने अपने पिता के घर की मूर्तियाँ चुरा ली थीं। **राहेल ऐसे घर में पली-बढ़ी थी जहाँ मूर्तियों की पूजा होती थी, और उसने अपने देवताओं को अपने साथ ले जाने का फ़ैसला किया।**

उन्होंने तब तक इंतज़ार किया जब तक लाबान अपनी भेड़ों की ऊन कतरने के लिए मीलों दूर नहीं चला गया, और फिर वे चुपके से निकल पड़े और गिलाद पर्वत की ओर बढ़े, जो यरदन नदी के पूर्व में स्थित है। उन्होंने तेज़ी से काफ़ी दूरी तय कर ली। **लेकिन तीसरे दिन लाबान को पता चला कि याकूब भाग गया है, और वह उन्हें ढूँढ़ने के लिए तेज़ी से निकल पड़ा।** वह इतना गुस्से में था कि याकूब को मार डालना चाहता था, साथ ही याकूब द्वारा ले जाया गया सारा सामान वापस पाना चाहता था और अपनी दोनों बेटियों व उनके बच्चों को भी वापस लाना चाहता था। **लेकिन परमेश्वर ने बीच में आकर हस्तक्षेप किया।**

उस रात सपने में **परमेश्वर ने लाबान से बात की और उसे चेतावनी दी, "तुम जो कुछ भी कहते या करते हो, उसमें बहुत सावधान रहना।"** लाबान गुस्से में आ रहा था, लेकिन अब उसने अपना तरीका बदल लिया। लाबान कितना चालाक और कूटनीतिक था! **उसने याकूब को दोषी महसूस कराने की कोशिश की कि उसने उसके परिवार को एक शानदार विदाई से वंचित कर दिया।** उसने कहा कि वह बड़े उत्सव के साथ प्रेमपूर्वक विदा करना चाहता था। परन्तु उसकी बातें सच्ची नहीं थीं।

लाबान ने माना कि वह उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहता था, लेकिन याकूब के परमेश्वर ने रात में उससे बात की और उसे कुछ भी बुरा करने से रोक दिया।

इसके बाद, उसने चोरी हुई मूर्तियों के बारे में पूछा। याकूब को नहीं पता था कि राहेल ने मूर्तियाँ चुराई हैं, और उसे लाबान की बात पर यकीन नहीं हुआ। **लेकिन लाबान को याकूब की बात पर यकीन नहीं था।**

20 साल बाद, वे एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। लाबान ने सबके तंबू तलाशे, लेकिन परिवार की मूर्तियाँ नहीं मिलीं। राहेल ने उन्हें ऊँट के बक्से में रख दिया था और फिर उस पर बैठ गई थी। जब वह उसके तंबू में आया, तो उसने कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है और वह उठना नहीं चाहती। राहेल अपने पिता जैसी ही थी - बहुत चालाक और धोखेबाज़।

राहेल का अपने पिता के घर से परिवार की मूर्तियों (तेरापीम) को ले जाना, हमारी सोच से कहीं ज़्यादा गंभीर बात थी। **जिसके पास घर के देवता होते थे, परिवार का नेतृत्व उसी के हाथ में माना जाता था; इसका मतलब यह था कि याकूब बूढ़े लाबान की सारी संपत्ति पर अपना हक़ जता सकता था!** यही वजह थी कि लाबान इससे इतना परेशान था। वह नहीं चाहता था कि याकूब को उसकी संपत्ति मिले। उसे लगता था कि याकूब को पहले ही बहुत कुछ मिल चुका है।





"परमेश्वर ने उसे इससे बच निकलने नहीं दिया।"

परमेश्वर की शिक्षा:
मनुष्य जो कुछ बोता है, वही वह काटेगा।

याकूब का आत्मविश्वास बढ़ा। उन्हें मूर्तियाँ नहीं मिलीं और याकूब को यकीन हो गया कि वे आस-पास कहीं नहीं हैं। **वह अपने ससुर को डाँटना चाहता था, जो उसका पीछा करते हुए आया था। उसने कहा, "मेरा अपराध क्या है?** मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है कि तुम इतने क्रोध से मेरा पीछा कर रहे हो?"

उसने बीस वर्षों तक लाबान की अच्छी सेवा की, फिर भी लाबान के निवेशों की देखभाल करते हुए कई बार उसके साथ अन्यायपूर्ण और कठोर व्यवहार किया गया। याकूब चतुर था और सोचता था कि वह पाप करके भी बच निकलेगा। परन्तु परमेश्वर ने उसे किसी भी बात में बच निकलने नहीं दिया, क्योंकि परमेश्वर ने बहुत स्पष्ट कर दिया कि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।

याकूब ने अपने घर पर परमेश्वर के अधीन होने से इनकार कर दिया था, इसलिए उसे लाबान के अधीन होना पड़ा। याकूब सम्मान के साथ पत्नी लेने आया था, लेकिन उसे नौकर बना दिया गया, क्योंकि परमेश्वर पहलौठे के अधिकारों का सम्मान करते हैं।

याकूब ने अपने पिता को धोखा दिया था, इसलिए उसे भी अपने ससुर से धोखा मिला। छोटा याकूब बड़े जैसा बन गया। फिर उसे पता चला कि उसे बड़ी बेटी दी गई है, जबकि उसे लगा था कि उसे छोटी बेटी मिल रही है। **उसने अपनी स्वार्थी सोच दिखाई, जो उसके बड़े बेटे का अधिकार पाने के तरीके से साफ़ पता चली; उसने अपनी माँ को अपने हाथों पर बकरियों की खाल लपेटने दी।** बाद में याकूब की ज़िंदगी में, उसके अपने बेटों ने भी उसे इसी तरह धोखा दिया। उन्होंने एक जवान बकरी को मारा और उसके खून में यूसुफ़ का रंग-बिरंगा कोट डुबो दिया। उसने अपने पिता को यह कहकर धोखा दिया था कि वह उनका चहेता बेटा है, और **बाद में उसे भी अपने चहेते बेटे यूसुफ़ के बारे में धोखा मिला।** मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।

याकूब ने माना कि परमेश्वर ही उसका न्याय करने वाला है। "मेरे पिता का परमेश्वर अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, जिसका भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता, **तो निश्चय तू अब मुझे खाली हाथ जाने देता।** मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे डाँटा।"" उत्पत्ति 31:42

याकूब के जीवन के बारे में दिए गए विवरण के आधार पर "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा", बाइबल के इस सिद्धांत को दिखाने वाली एक तुलना तालिका:

याकूब ने क्या बोया (उसके काम और पाप)	याकूब ने क्या काटा (उसके परिणाम और प्रतिफल)
अपने घर में **परमेश्वर के अधीन होने से इनकार किया।**	**उसे अपने मामा लाबान की बात मानने के लिए मजबूर होना पड़ा** और उसके साथ एक नौकर जैसा बुरा बर्ताव किया गया।
अपने बड़े भाई का जन्मसिद्ध अधिकार लेकर **पहिलौठे के अधिकार का अनादर किया।**	पत्नी को सम्मान के साथ पाने के बजाय उसे **दासी बना लिया,** क्योंकि परमेश्वर पहलौठे के अधिकारों का सम्मान करता हैं।
आशीर्वाद चुराने के लिए **अपने पिता को धोखा दिया।**	**अपने ससुर लाबान द्वारा धोखा खाया।**
छोटा होते हुए भी **बड़े भाई की तरह व्यवहार किया।**	**उसे बड़ी बहन (लिया) दे दी गई,** जबकि उसको लगा था कि उसे छोटी बहन (राहेल) मिल रही है।
अपने पिता को धोखा देने के लिए उसने अपने हाथों पर **बकरियों की खाल का इस्तेमाल किया।**	**उसके बेटों ने एक बकरी को मारा और** उसे धोखा देने के लिए **अपने सबसे प्यारे बेटे (यूसुफ़) के कोट को उसके खून में डुबो दिया।**
अपने पिता को यह कहकर धोखा दिया कि वह उसका प्रिय बेटा है।	**अपने प्रिय पुत्र** यूसुफ **के विषय में अपने ही पुत्रों द्वारा धोखा खाया।**

आखिरकार, भले ही याकूब को लगा कि वह अपनी चालाकी से पाप करके बच सकता है, लेकिन परमेश्वर ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। 20 साल की मेहनत के बाद याकूब इस नतीजे पर पहुँचा कि **परमेश्वर ही उसका असली न्याय करने वाला है, जिसने उसकी तकलीफ को देखा और उसकी रक्षा के लिए कदम उठाया।**

अब वह लाबान को छोड़कर जाने के लिए तैयार था। उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली और एक समझौता किया। याकूब ने एक पत्थर को खंभे की तरह खड़ा किया, पत्थरों का एक ढेर जमा किया और एक समझौता किया। **दोनों इस बात पर सहमत हुए कि परमेश्वर उनके गवाह हैं।** उन्होंने सहमति जताई: "जब हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देख-भाल करता रहे" (उत्पत्ति 31:49)। दूसरे शब्दों में, यह दो ऐसे लोगों के बीच हुआ समझौता था जो अब एक-दूसरे की चीज़ें नहीं चुराएंगे। इसके बाद, वे अलग हो गए। पत्थरों का वह ढेर मिस्पा में लाबान और याकूब के बीच एक सीमा रेखा के रूप में बना रहा। दोनों ने वादा किया कि वे एक-दूसरे की तरफ़ नहीं जाएंगे।

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 31 से हमारे लिए सीख

परमेश्वर हमारा सर्वोच्च रक्षक और अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने वाला हैं।

- याकूब की कमियों और लाबान के अन्यायपूर्ण व्यवहार (उसकी मजदूरी दस बार बदलने) के बावजूद, **परमेश्वर ने विश्वासयोग्यता से हस्तक्षेप किया।** (2 थिस्सलुनीकियों 3:3)जब लाबान ने याकूब को नुकसान पहुँचाने के इरादे से उसका पीछा किया, तो परमेश्वर ने सपने में लाबान को दर्शन दिया और उसे सावधान रहने की चेतावनी दी, इस तरह याकूब की शारीरिक रूप से रक्षा की। **परमेश्वर ने याकूब को याद दिलाया, "मैं बेतेल का परमेश्वर हूँ," जिससे यह साबित हुआ कि वह अपने वादों को पूरा करता है** (इब्रानियों 13:5-6), **और अपने लोगों की रक्षा करता है, चाहे वे कितनी ही कठिन या विरोधपूर्ण परिस्थितियों में क्यों न हों।**



- **नए नियम से संबंध:** 2 थिस्सलुनीकियों 3:3 - "परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा: और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।" इब्रानियों 13:5-6 - "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

परमेश्वर की सुरक्षा पर विचार: जब आप निराश होते हैं या दूसरे आपके साथ बुरा बर्ताव करते हैं, जैसे लाबान ने याकूब के साथ किया था, तो क्या आपको भरोसा होता है कि परमेश्वर आपकी तकलीफ़ को देख रहा है और सही समय पर दखल देगा, या आप मामलों को खुद अपने हाथों में लेने की कोशिश करते हैं?

सवाल 2

छिपी हुई मूर्तियाँ: राहेल चुपके से अपने पिता के घर की मूर्तियाँ अपने साथ ले गई थी। क्या ऐसी कोई "मूर्तियाँ" हैं - जैसे आदतें, लगाव या दुनिया की सुख-सुविधाएँ जिन्हें आप चुपचाप अपनी पुरानी ज़िंदगी से परमेश्वर के साथ अपने सफ़र में साथ ले जा रहे हैं?

सवाल 3

विश्वास से जीना: अभी आपके जीवन में ऐसी कौन सी खास स्थिति है, जिसमें आपको याकूब की तरह चालें चलने के बजाय पूरी तरह से परमेश्वर के वादों और उसके वचन पर भरोसा करने की ज़रूरत है?

सवाल 4

पवित्र आत्मा का साथ: सफलता के लिए दुनिया के तरीकों पर निर्भर रहने के बजाय, इस हफ़्ते आप पवित्र आत्मा को कैसे बुला सकते हैं ताकि वे आपको परमेश्वर के सत्य की नींव पर फ़ैसले लेने में मदद कर सकें?


मोड़
उत्पत्ति 32:1-32

मोड़

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 32:1-32
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 32:1-32

प्रिय परमेश्वर,

हम आपको इस मनन के समय में आमंत्रित करते हैं। हमारी सहायता कीजिए कि हम अपनी ताकत के भरोसे संघर्ष करना छोड़ दें और पूरी तरह आपके अधीन हो जाएँ। हमें सिखाइए कि सच्ची विजय संघर्ष करने से नहीं, बल्कि नम्र समर्पण के साथ आपसे दृढ़ता से लगे रहने से मिलती है।

आमीन।

परमेश्वर के साथ याकूब के रिश्ते में आया अहम मोड़

उत्पत्ति 32

जब याकूब ने बुढ़ापे में अपने जीवन के बारे में सोचा, तो उसे यह समय अपने **जीवन का सबसे अहम पल याद आया - यह परमेश्वर के साथ उसके रिश्ते में एक बड़ा बदलाव लाने वाला मोड़ था।** अब तक, याकूब ने कभी भी परमेश्वर के सच्चे भक्त जैसा व्यवहार नहीं किया था। उसने परमेश्वर के प्रति इतनी खराब गवाही दी थी कि दुनिया उसे कभी भी परमेश्वर का अनुयायी नहीं मानती।

याकूब का दिल जीतने के लिए परमेश्वर को उसे अनुशासित करना पड़ा (इब्रानियों 12:6)। याकूब को यह सीखने में 20 साल लग गए, और उसने निश्चित रूप से इसके लिए मेहनत की।

अब याकूब परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाला था। इसलिए परमेश्व र ने उससे सीधे व्यवहार करना शुरू किया, **ताकि उसे फल लाने, सच्ची सेवा करने और परमेश्वर की गवाही देने के योग्य बनाया जा सके।**

अपने भाई एसाव से मिलने का याकूब का डर

वायदे के देश में लौटते समय **याकूब की मुलाक़ात स्वर्गदूतों से हुई।** बेथेल में हुई अपनी पिछली मुलाक़ात की वजह से वह ज़रूर पहचान गया होगा कि वे कौन थे। जब उसने अपने देश की सीमा में प्रवेश किया, तो उसे पता था कि जल्द ही उसकी मुलाक़ात अपने भाई एसाव से होगी।

उसे याद आया कि उसने आखिरी बार 20 साल पहले एसाव को देखा था। एसाव उससे बहुत नाराज़ था। इसलिए इस बार, याकूब ने अपने आगे कुछ दूत भेजे और उन्हें निर्देश दिया कि वे कहें, "**जब तुम मेरे भाई एसाव के पास पहुँचो, तो उससे कहना, 'मेरे प्रभु एसाव।' और मेरा ज़िक्र करते हुए कहना, 'आपका सेवक, याकूब।'"याकूब** का रवैया बदल गया था। **उसने चालाकी से जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त किया था और एसाव का आशीर्वाद चुरा लिया था।** याकूब पहले एक धूर्त इंसान था, लेकिन अब उसकी बातें अलग थीं। शायद उसने लाबान से कुछ कड़े सबक सीखे थे।

दूत लौटकर याकूब के पास आए और बोले, **"हम आपके भाई एसाव से मिले। वह चार सौ पुरुषों को साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा है।"**

अब **याकूब बहुत डरा हुआ था,** क्योंकि उसे पता नहीं था कि एसाव के मन में क्या है। उसने शायद अपने सेवकों से पूछा होगा, "क्या वह परेशान लग रहा था? या मेरे प्रति उसके मन में कड़वाहट या नफ़रत थी?" भले ही उन्होंने कहा हो, "नहीं, वह तो आपके आने से खुश लग रहा था," लेकिन याकूब ने सोचा कि शायद **एसाव इसलिए खुश था क्योंकि उसे बदला लेने का मौका मिल रहा था।** याकूब परेशान था। उसे लगा कि **वह खतरे में है, इसलिए उसने अपने दल को दो हिस्सों में बाँट दिया और उन्हें अलग-अलग दिशाओं में भेज दिया, ताकि अगर उसका भाई एक दल पर हमला करे, तो दूसरा दल बच सके।** फिर उसने कुछ अलग तरह से सोचने के संकेत दिए।



> हम प्रार्थना में अपनी परेशानियाँ प्रभु के सामने रखते हैं। फिर प्रार्थना पूरी होने पर, हम हर परेशानी को वापस अपनी पीठ पर लाद लेते हैं और उन्हें लेकर फिर से आगे बढ़ जाते हैं।

याकूब मदद के लिए परमेश्वर को खोजता है

याकूब अपने संकट में परमेश्वर से मदद मांगता है।

"फिर याकूब ने कहा, **"हे यहोवा, हे मेरे दादा अब्राहम के परमेश्वर, हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तूने तो मुझसे कहा था कि अपने देश और जन्म-भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूँगा: तूने जो-जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस यरदन नदी के पार उतर आया, और अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे-ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूँ। मेरी विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा मैं तो उससे डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़कों को भी मार डाले। तूने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूँगा, और तेरे वंश को समुद्र के रेतकणों के समान बहुत करूँगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जा सकते।""** (उत्पत्ति 32:9-12)

याकूब ने परमेश्वर को पुकारा, क्योंकि वही **उसके पिता अब्राहम के परमेश्वर और उसके पिता इसहाक के परमेश्वर थे।** पहली बार उसने कहा, **"मैं तेरी दया की छोटी-सी बात के भी योग्य नहीं हूँ।"**

पहली बार, **उसने माना कि वह परमेश्वर की नज़र में पापी है।** जब कोई व्यक्ति **इस तरह परमेश्वर की ओर बढ़ना शुरू करता है, तो परमेश्वर उससे बातचीत करते हैं।**

याकूब की एसाव को शांत करने की योजना

याकूब की रात बहुत कठिन बीती। **उसने सोचा कि एसाव को कैसे शांत किया जाए। उसने बहुत उदार उपहार भेजने की योजना बनाई-भेड़-बकरियाँ, ऊँट, बैल और गधे-** जिन्हें तीन दलों में बाँट दिया गया। जब एसाव याकूब की ओर आएगा, तो सबसे पहले उसका सामना पहले दल से होगा, और सेवक कहेगा, **"यह आपके भाई याकूब की ओर से आपके लिए एक भेंट है।"** फिर एसाव थोड़ा आगे बढ़ेगा और दूसरे झुंड से मिलेगा, और उसके बाद तीसरे से। **तब तक याकूब को आशा थी कि एसाव का क्रोध शांत हो जाएगा।**

याकूब ने अपनी सारी संपत्ति और अपने पूरे परिवार को यब्बोक नाले के पार भेज दिया, लेकिन वह स्वयं दूसरी ओर ठहरा रहा, ताकि यदि उसका भाई एसाव आए, तो वह याकूब को मार दे, पर उसके परिवार को बख्श दे।

जब याकूब ने प्रार्थना की, तो उसने प्रभु को याद दिलाया, "तूने ही मुझसे अपने देश लौटने को कहा था। **तूने कहा था कि तू मेरी रक्षा करेगा।" लेकिन क्या उसे परमेश्वर पर विश्वास था?** नहीं। उसने ये सारे इंतज़ाम किए, **जिनसे पता चलता है कि उसे परमेश्वर पर ज़रा भी भरोसा नहीं था।** अक्सर हम भी ऐसा ही करते हैं। हो सकता है कि हम प्रार्थना में अपनी परेशानियाँ प्रभु के सामने रखें। **लेकिन प्रार्थना के बाद, हम उन परेशानियों को वापस अपने कंधों पर लाद लेते हैं** और उन्हें लेकर फिर से आगे बढ़ जाते हैं। **हम उस पर विश्वास नहीं करते, है ना? हम उस पर उतना भरोसा नहीं करते जितना हमें करना चाहिए।**



याकूब के गलत चुनावों के परिणाम

याकूब अपने जीवन के गलत चुनावों के परिणामों का सामना कर चुका था, और इससे उसका मन भय और संदेह से भर गया था। उसने एसाव के साथ बुरा व्यवहार किया था। परमेश्वर ने उसे कभी नहीं कहा था कि वह इस तरीके से जन्मसिद्ध अधिकार और आशीर्वाद प्राप्त करे। परमेश्वर स्वयं उसे यह दिला देते। और अब याकूब अकेला प्रतीक्षा कर रहा था।

लेकिन याकूब अकेला नहीं था। लाबान उसके पीछे था और उसका भाई एसाव उसके आगे। **याकूब उन दोनों में से किसी का भी मुक़ाबला नहीं कर सकता था। वह अब एक मुश्किल स्थिति में फँस गया था,** और उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ़ जाए। उस रात वह अकेला था क्योंकि वह अकेला रहना चाहता था, और वह कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहता था।

याकूब के साथ किसने कुश्ती की?

अब, हमें बताया गया है कि **याकूब का सामना एक ऐसे आदमी से हुआ जो पूरी रात उससे कुश्ती लड़ता रहा।** वह आसानी से हार मानने वाला नहीं था। यह कौन था जिसने उस रात याकूब से कुश्ती लड़ी? **यह कोई और नहीं बल्कि जन्म से पहले का मसीह था।** (इस रात के बारे में और जानकारी के लिए होशे 12:1-5 भी देखें।)

उस रात यह हुआ: **"और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।** जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब **उसकी जाँघ की नस को छुआ; और याकूब की जाँघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। तब उसने कहा, "मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होनेवाला है।"** याकूब ने कहा, **"जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।"** और उसने याकूब से पूछा, **"तेरा नाम क्या है?"** उसने कहा, "याकूब।" उसने कहा, **"तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।"** (उत्पत्ति 32:24-28)

याकूब कुश्ती नहीं लड़ रहा था; वह उस 'एक' को थामे हुए था। **याकूब को समझ आ गया कि परमेश्वर के साथ संघर्ष करने या विरोध करने से कुछ हासिल नहीं होता। उनके साथ आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका है खुद को सौंप देना और बस उन्हें थामे रहना।** अब्राहम ने यह बात सीख ली थी, और इसीलिए उसने परमेश्वर की बात पर "आमीन" कहा। **उसने परमेश्वर पर विश्वास किया, और परमेश्वर ने उसे धर्मी माना।** अब्राहम अपनी ताकत के आखिरी छोर तक पहुँच गया था और उसने परमेश्वर को गले लगा लिया।

यह सबक हम सबके लिए है, जब हम ऐसी स्थिति में होते हैं जहाँ हमें परमेश्वर पर भरोसा करने की ज़रूरत होती है। जब आप डटे रहने को तैयार होते हैं, तो वह आपकी मदद के लिए तैयार रहते हैं। याकूब ने तब तक उनका विरोध किया **जब तक कि परमेश्वर के स्पर्श ने उसे अपाहिज नहीं कर दिया।** फिर, यह पहचानकर कि वह कौन थे, **याकूब उनसे तब तक लिपटा रहा जब तक उन्होंने उसे आशीष नहीं दी। इसके बाद से हम याकूब में बदलाव देखते हैं। परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखकर उसके दिल में आए इस बदलाव को चिह्नित किया। वह एक नया इंसान बन गया था।**



परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 32 से हमारे लिए सीख

1

जब हम अपनी अयोग्यता को स्वीकार करते हैं, तब परमेश्वर हमसे बात करते हैं।

- **सत्य:** पहली बार याकूब ने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उस पर जो दया की है, उसके सबसे छोटे भाग के भी वह योग्य नहीं है। जब कोई व्यक्ति यह स्वीकार करते हुए परमेश्वर के पास आता है कि वह उनकी दृष्टि में एक पापी है, तब परमेश्वर उससे बात करते हैं।
- **नए नियम से संबंध:** लूका 18:13-14 में चुंगी लेने वाले का वर्णन है, जिसने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।" वह धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया। परमेश्वर नम्र लोगों के निकट आते हैं, आत्मनिर्भर और घमण्डी लोगों के नहीं।

2

त्मिक विजय संघर्ष करने से नहीं, बल्कि समर्पण करने से मिलती है।

- **सत्य:** याकूब सारी रात कुश्ती करता रहा, परन्तु उसे विजय तब तक नहीं मिली जब तक परमेश्वर ने उसकी जाँघ के जोड़ को छूकर उसे लंगड़ा नहीं कर दिया। तभी याकूब ने लड़ना छोड़ दिया और उनसे लिपट गया। उसने सीखा कि परमेश्वर का विरोध करके कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता-आगे बढ़ने का एक ही मार्ग है: उनके सामने समर्पण करना और उनसे दृढ़ता से लगे रहना।
- **नए नियम से संबंध:** याकूब 4:7-8 "इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ। और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"2 कुरिन्थियों 12:9 "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।"

3

सच्चा विश्वास सारा बोझ परमेश्वर पर छोड़ देता है।

- **सत्य:** याकूब ने सुरक्षा के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर को उनके वादों को याद दिलाया, लेकिन फिर डर के कारण बचाव के लिए कई इंतज़ाम भी किए -जिससे पता चलता है कि उसे परमेश्वर पर सच में भरोसा नहीं था। हम भी अक्सर ऐसा ही करते हैं: हम प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन प्रार्थना खत्म होने के बाद, हम वही बोझ वापस उठा लेते हैं और खुद ही उसे ढोते रहते हैं।
- **नए नियम से संबंध:** 1 पतरस 5:7 "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।" फिलिप्पियों 4:6-7 "किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और विनती के द्वारा, धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित की जाएं।

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

अपनी अयोग्यता को मानना: जब आप प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाते हैं, तो क्या आपको अपनी कोशिशों की वजह से परमेश्वर से मदद पाने का हक महसूस होता है, या आप उनके पास एक नम्र दिल के साथ जाते हैं और यह मानते हैं कि आप उनकी दया के लायक नहीं हैं?

सवाल 2

समर्पण बनाम संघर्ष: याकूब की जाँघ का जोड़ इसलिए छुआ गया ताकि वह कुश्ती करना छोड़ दे और परमेश्वर से लिपट जाए। आपके जीवन में ऐसी कौन-सी "लंगड़ाहट" या कमजोरी है, जिसका उपयोग शायद परमेश्वर आपको अपनी शक्ति पर निर्भर रहना छोड़कर उन पर भरोसा करना सिखाने के लिए कर रहे हैं?

सवाल 3

बोझ सौंपना: किसी चिंता के बारे में प्रार्थना करने के बाद, वह कितनी जल्दी आपके मन में वापस आ जाती है? अगर वह तुरंत वापस आ जाती है, तो क्या आपने सचमुच वह बोझ परमेश्वर पर "डाल" दिया था, या सिर्फ़ उन्हें उसके बारे में बताया था?

सवाल 4

किसी ऐसे मौजूदा झगड़े या समस्या के बारे में सोचें जिसे आप सिर्फ़ अपनी इच्छा-शक्ति से "ठीक" करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर आप संघर्ष करना छोड़ दें और इसके बजाय परमेश्वर से पूछें, "आप मुझे इसके ज़रिए क्या सिखाना चाह रहे हैं?" तो यह कैसा होगा?

सवाल 5

जब प्रार्थना करने के बाद वही चिन्ता फिर लौट आए,तो समस्या पर दोबारा सोचने के बजाय, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के लिए उसकी स्तुति करने का अवसर मानें।


याकूब का एसाव से मिलना
उत्पत्ति 33:1-20

याकूब का एसाव से मिलना

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 33:1-20
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 33:1-20

प्रिय परमेश्वर,

धन्यवाद कि आपका रूपांतरित करने वाला कार्य हमारे जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाता है।हमें लेने से देने की ओर, और चालबाज़ी से भरोसे की ओर बढ़ने में मदद करें। जहाँ रिश्तों में सुलह की ज़रूरत है, वहाँ हमारे और उनके दिलों को नरम करें और अपनी कृपा से एक नया अध्याय लिखें।

आमीन।

भाइयों का फिर से मिलना

उत्पत्ति 33:1-20

सुबह याकूब ने नज़र उठाई और देखा कि एसाव 400 आदमियों के साथ उसकी ओर आ रहा है। उसे पता नहीं था कि एसाव दोस्त बनकर आ रहा है या दुश्मन बनकर।

लेकिन जब वे पास आए, **एसाव दौड़कर उससे मिला, उसे गले लगाया और चूमा, और वे रो पड़े।** आख़िरकार, वे जुड़वां भाई जो थे। **ज़रूर परमेश्वर ने एसाव का दिल बदल दिया होगा,** क्योंकि पिछली बार जब हमने उसे देखा था, तो उसने याकूब को मारने की कसम खाई थी।

फिर याकूब ने अपने भाई को अपने परिवार से मिलवाया। फिर एसाव ने उन सभी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बारे में पूछा जो याकूब ने उसके आगे भेजे थे। **"ये तुम्हारे लिए हैं, एसाव!"** एसाव शायद हँसा होगा जब उसने जवाब दिया, **"मेरे पास काफ़ी है, मेरे भाई;** जो तुम्हारे पास है, वो अपने लिए रख लो।"

"याकूब ने कहा, **" नहीं, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मेरी भेंट ग्रहण कर: क्योंकि मैंने तेरा दर्शन पाकर, मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है, और तू मुझसे प्रसन्न हुआ है। इसलिए यह भेंट, जो तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर; क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है, और मेरे पास बहुत है।"** जब उसने उससे बहुत आग्रह किया, तब उसने भेंट को ग्रहण किया।" (उत्पत्ति 33:10-11)



"अब तक, हर भाई दूसरे से कुछ-न-कुछ पाने की कोशिश कर रहा था, खासकर याकूब। पहले उसने जन्मसिद्ध अधिकार पाने के लिए एक कटोरा स्टू का सौदा किया था; लेकिन अब वह अपने भाई को बिना किसी बदले के अपने झुंड और मवेशी देने को तैयार है!"

याकूब का परिवर्तन

कितना बड़ा बदलाव! **अब तक, दोनों भाई एक-दूसरे से कुछ न कुछ पाने की कोशिश कर रहे थे, खासकर याकूब। पहले, उसने जन्मसिद्ध अधिकार पाने के लिए स्टू का एक कटोरा दिया था; अब वह बदले में कुछ भी लिए बिना अपने भाई को भेड़-बकरियों और जानवरों के झुंड देने को तैयार था!** उसने ज़ोर देकर कहा कि उसका भाई उसका तोहफ़ा ले ले। **याकूब में एक बहुत बड़ा बदलाव आया है।**

फिर एसाव ने याकूब को अपने साथ चलने के लिए कहा, ताकि वह उन्हें रास्ता दिखा सके और उनकी रक्षा कर सके। लेकिन याकूब को अपने छोटे परिवार और अपने झुंडों के छोटे जानवरों का ध्यान था। वे तेज़ी से सफ़र नहीं कर सकते थे। **"भाई एसाव, हम तुम्हारी सेना के साथ तेज़ी से नहीं चल सकते। तुम आगे बढ़ो।"** इसलिए एसाव ने याकूब के परिवार की सहायता के लिए कुछ सेवकों को छोड़ दिया और स्वयं आगे बढ़कर दक्षिणी कनान में सेईर, **अर्थात् एदोम देश,** चला गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद वह सेईर पर्वत पर बस गया, **जिसे परमेश्वर ने एसाव को उसके अधिकार के लिए दिया था।** (देखें व्यवस्थाविवरण 2:5)

याकूब के लिए एक नया जीवन

याकूब में एक बड़ा बदलाव आया था। उसकी सारी चालाकी बेकार साबित हुईं। परमेश्वर ने लाबान को चेतावनी दी थी कि वह याकूब को कोई नुकसान न पहुँचाए, और परमेश्वर ने एसाव को अपने भाई से सुलह करने के लिए तैयार किया। अब याकूब को दोनों तरफ से शांति मिल गई थी। परमेश्वर ने ही उसके लिए यह सब इंतज़ाम किया था। अगर याकूब अपनी चालाकी पर भरोसा करता, तो हो सकता है कि उसकी मौत हिंसक तरीके से होती।

बाद में, जब याकूब ने अपनी ज़िंदगी पर पीछे मुड़कर देखा, तो उसे परमेश्वर का हाथ दिखाई दिया और उसने परमेश्वर की महिमा की। लेकिन अभी, याकूब विश्वास में चलना सीख रहा था।

अपने नए घर में याकूब ने एक वेदी बनाई, ठीक वैसे ही जैसे उसके दादा अब्राहम हर जगह किया करते थे। **उसने उस नई जगह का नाम 'एल-एलोहे-इस्राएल' रखा, जिसका मतलब है "परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर।"** याकूब ने अपने नए नाम को परमेश्वर के नाम से जोड़ा। यह उस व्यक्ति में असल तरक्की को दिखाता है जो अभी-अभी विश्वास में चलना सीख रहा था। लेकिन यह तरक्की धीरे-धीरे हो रही थी।

उसे और परिपक्व होने की ज़रूरत होगी, क्योंकि उसके परिवार की ज़िंदगी का अगला अध्याय दुखद घटना लेकर आएगा।



> याकूब अब अपने आत्मिक पैरों से चलना सीख रहा है।

परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 33 से हमारे लिए सीख

परमेश्वर का रूपांतरित करने वाला कार्य वास्तविक परिवर्तन लाता है।

- **सत्य:** याकूब की पहचान चीज़ें लेने वाले के तौर पर थी: उसने जन्मसिद्ध अधिकार लिया, आशीर्वाद लिया, और हर तरह का फ़ायदा उठाया जो वह उठा सकता था। लेकिन पेनीएल में परमेश्वर से मुलाकात के बाद, एक बहुत बड़ा बदलाव आया। अब वह उसी भाई को दिल खोलकर देने पर अड़ गया जिसे उसने कभी धोखा दिया था। परमेश्वर ने दोनों तरफ़ पीछे लाबान और आगे एसाव के साथ शांति का इंतज़ाम कर दिया था। अगर याकूब को सिर्फ़ अपनी चालाकी पर छोड़ दिया जाता, तो शायद उसकी मौत हिंसक तरीके से होती।



- **नए नियम से संबंध:** 2 कुरिन्थियों 5:17 "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।" इफिसियों 4:23-24 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ, और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।"



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

बदलाव का सबूत: याकूब लेने वाले से देने वाला बन गया।
आप अपनी ज़िंदगी में परमेश्वर के बदलाव लाने वाले काम का क्या ठोस सबूत बता सकते हैं? क्या ऐसे कुछ पहलू हैं जहाँ आपका स्वभाव सच में बदला है, या ऐसे पहलू हैं जहाँ "पुराना याकूब" अभी भी काम करता है?

सवाल 2

परमेश्वर की योजनाओं पर भरोसा करना: परमेश्वर ने एसाव का दिल नरम कर दिया और सुलह का ऐसा इंतज़ाम किया जो याकूब की चालें कभी नहीं कर पातीं। क्या आपकी ज़िंदगी में कोई ऐसा टूटा हुआ रिश्ता है जिसे ठीक करने की कोशिश आप अपनी ताकत से कर रहे हैं, जबकि आपको परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए कि वह दूसरे व्यक्ति के दिल में काम करेगा?

सवाल 3

याकूब ने एक वेदी बनाई और उसका नाम "परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर" रखा, जिसने सबके सामने उसकी नई पहचान को परमेश्वर से जोड़ा। इस हफ़्ते आप कौन-सा एक व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं जिससे आप सबके सामने यह मान सकें कि परमेश्वर ने आपके जीवन में क्या किया है, भले ही आपको अपनी बढ़ोतरी धीमी लग रही हो?


दीना और
शेकेमवासी
उत्पत्ति 34:1-31

दीना और शेकेमवासी

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 34:1-31
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 34:1-31

प्रिय परमेश्वर,

हमें अपनी शारीरिक इच्छाओं में आकर काम करने से बचाएं। जब हमारे साथ कुछ गलत हो, तो खुद बदला लेने के बजाय आपके न्याय पर भरोसा करने में हमारी मदद करें। हमें समझदारी से आगे बढ़ने का साहस और बदला लेने की बात आपके हाथों में सौंपने का विश्वास दें।

आमीन।

एक पारिवारिक कलंक

उत्पत्ति 34:1-31

याकूब को अपने परिवार सहित लाबान के घर से निकल जाने के लिए प्रेरित करने का एक कारण यह था कि वहाँ उसके बच्चे अधार्मिक वातावरण के प्रभाव में आ रहे थे। याकूब के लिए पारिवारिक परेशानियाँ कोई नई बात नहीं थीं। हमने अब्राहम और इसहाक के परिवारों में भी झगड़े देखे थे। याकूब का परिवार भी मुश्किलों से गुज़रा, खासकर लियाह के चार बेटों की वजह से। ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि एक से ज़्यादा शादियाँ हुई थीं या इसलिए कि याकूब लिया से प्यार नहीं करता था और उसके बच्चों को याकूब से कम अहमियत मिलती थी। ये चारों पुत्र - इस घटना में शिमोन और लेवी, तथा आगे चलकर पहिलौठा रूबेन और यहूदा - अपने जीवन में खुलेआम किए गए पाप के कारण बुरी तरह असफल सिद्ध हुए।

जब याकूब ने अपने परिवार को कनान में बसाया, तो उसे उम्मीद थी कि वह उन्हें अपनी मूल संस्कृति से फिर से जोड़ पायेगा। एक दिन, उसकी बेटी दीना पास के शहर में गई। शहर के ही एक आदमी ने जो हिव्वी जाति के हमोर का बेटा था उसे देखा और उसके साथ बलात्कार किया। इस घटना के बाद, वह दोषी युवक उससे शादी करना चाहता था।

जब उसके भाइयों को यह बात पता चली, तो उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया। उस युवक शेकेम का पिता हमोर, अपने पुत्र के लिए दीना का हाथ माँगने आया। वह यह प्रस्ताव भी रखना चाहता था कि उनके परिवारों के बीच और भी शादियाँ हों ताकि वे एक समुदाय बन जाएँ (और विरासत के ज़रिए याकूब की दौलत उनकी हो जाए)।

क्योंकि परमेश्वर की नज़र में दूसरी जाति में शादी करना गलत था, इसलिए याकूब को अपने बेटों का मार्गदर्शन करना चाहिए था। लेकिन उसे पता नहीं था कि वे शकेम और हामोर को धोखा देने की योजना बना रहे थे।



उन्होंने धोखे से कहा, "हम अपनी बहन को किसी ऐसे इंसान से शादी करने की इजाज़त नहीं दे सकते जिसका खतना न हुआ हो।" (लेकिन उनकी बहन के खिलाफ़ हुए जुर्म के बारे में कुछ नहीं बताया गया।) याकूब के बेटों ने चुनौती दी। "अगर तुम खतने की रस्म से गुज़रने को तैयार हो, तो सब ठीक हो जाएगा।" (यह ऐसा है जैसे कोई कहे कि अगर तुम किसी कलीसिया में शामिल हो जाते हो और सभी सही शब्दों का इस्तेमाल करते हो, तो तुम मसीह हो। लेकिन यह सच नहीं है। अगर तुमने मसीह पर भरोसा किया है, तो कुछ हुआ है, और तुम एक अलग इंसान हो।)

इसलिए शेकेम और हामोर के लोग खतना करवाने के लिए राज़ी हो गए। और जब वे इस नाज़ुक सर्जरी से ठीक हो रहे थे, तब दीना के भाई, शिमोन और लेवी, शहर में गए और बदला लेने के लिए वहाँ के सभी पुरुषों को मार डाला। फिर दूसरे भाई भी उनके साथ हो लिए और उन्होंने शहर के सारे मवेशी, धन-दौलत, औरतें और बच्चे लूट लिए।

जब वे घर लौटे, तो याकूब ने कहा, "तुम लोगों ने मेरे देश के लोगों के बीच मेरा नाम खराब कर दिया है।" उसने उन्हें इसलिए डाँटा कि उन्होंने उसकी बदनामी कराई, लेकिन उनके किए गए पाप के बारे में कुछ नहीं कहा। याकूब में बदलाव आ रहा है, लेकिन वह अभी पूरी तरह नहीं बदला है।

फिर लड़कों ने अपना और अपनी बहन का बचाव किया। "किसी न किसी को तो कुछ करना ही था!" लेकिन ज़ाहिर है, उन्होंने हद पार कर दी।

आज हम परमेश्वर के उस निर्देश को जानते हैं जिसके अनुसार बदला लेने का काम हमें नहीं, बल्कि परमेश्वर को करने देना चाहिए (देखें रोमियों 12:19-21)। जिस पल हम बदला लेने की कोशिश करते हैं, उसका मतलब है कि हम अब विश्वास से नहीं चल रहे हैं। हम यह कह रहे होते हैं कि हमें परमेश्वर पर भरोसा नहीं है कि वे इस मामले को सुलझा लेंगे।

स्वयं पर भरोसा जीवनभर के पछतावे का कारण बनता है।

उसकी ज़िंदगी के इस हिस्से में जो दुखद घटनाएँ हुईं, वे याकूब के अपनी इंसानी ताकत और इच्छा के अनुसार चलने का नतीजा थीं। पेनीएल में जब उसने परमेश्वर के साथ कुश्ती की, तो याकूब ने खुद पर भरोसा न करना तो सीख लिया, लेकिन अभी तक यह नहीं सीखा था कि परमेश्वर पर कैसे भरोसा किया जाए। वह अपने परिवार का एक धर्मी अगुवा नहीं था और न ही अपने 11 बेटों को संभालने के काबिल था। इस दुखद घटना के बाद, याकूब अब अपनी ज़िंदगी में परमेश्वर का हाथ देखने लगा है, और फिर वह एक ऐसा फ़ैसला करता है जो उसे बहुत पहले ही कर लेना चाहिए था।



> उसकी ज़िंदगी के इस अध्याय में जो दुखद घटनाएँ घटीं, वे याकूब के शरीर की इच्छाओं और अपनी ताकत पर चलने का नतीजा थीं।

सारांश तालिका:
याकूब का रूपांतरण

सिद्धांत	पुराना मनुष्य (याकूब)	नया मनुष्य (इस्राएल)	नया नियम का आदेश
स्थिति	आत्म-निर्भर	अयोग्य / दया का पात्र	लूका 18:13-14
तरीका	कुश्ती / संघर्ष	पकड़े रहना / समर्पण करना	2 कुरिन्थियों 12:9
भरोसा	विस्तृत वैकल्पिक योजनाएँ	वचन में विश्राम करना	1 पतरस 5:7
न्याय	शारीरिक प्रतिशोध	परमेश्वर के क्रोध पर भरोसा करना	रोमियों 12:19

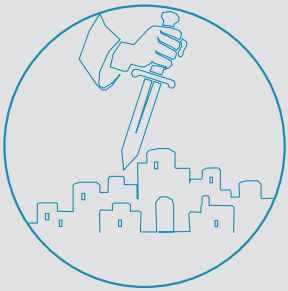


परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 34 से हमारे लिए सीख

सत्य: अपनी इच्छाओं के अनुसार चलने से दुखद परिणाम मिलते हैं, और बदला लेना परमेश्वर का काम है।

- **सत्य:** याकूब के बेटों ने अपनी बहन पर हुए हमले का बेरहमी से बदला लिया। उन्होंने धोखे का सहारा लिया-वही तरीका जो उनके पिता इस्तेमाल करते थे-और पूरे शहर का कत्लेआम कर दिया। लेकिन नया नियम साफ़ कहता है कि बदला लेने का काम हमें परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। जिस पल हम बदला लेने की कोशिश करते हैं, हम यह ज़ाहिर करते हैं कि हमें परमेश्वर पर भरोसा नहीं है कि वह सब ठीक कर देंगे; इससे पता चलता है कि हम अब विश्वास के रास्ते पर नहीं चल रहे हैं।



- **नए नियम से संबंध:** रोमियों 12:19-21"हे प्रियों अपना बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो, क्योंकि लिखा है, "बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।" गलातियों 5:16 "पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।"



मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

शरीर या आत्मा: जब कोई आपके साथ बुरा करता है, तो क्या आपकी पहली सोच अपनी गवाही को बचाने की होती है या अपने अहंकार को बचाने की? खुद बदला लेने से परमेश्वर के न्याय पर भरोसे की कमी कैसे पता चलती है?

सवाल 2

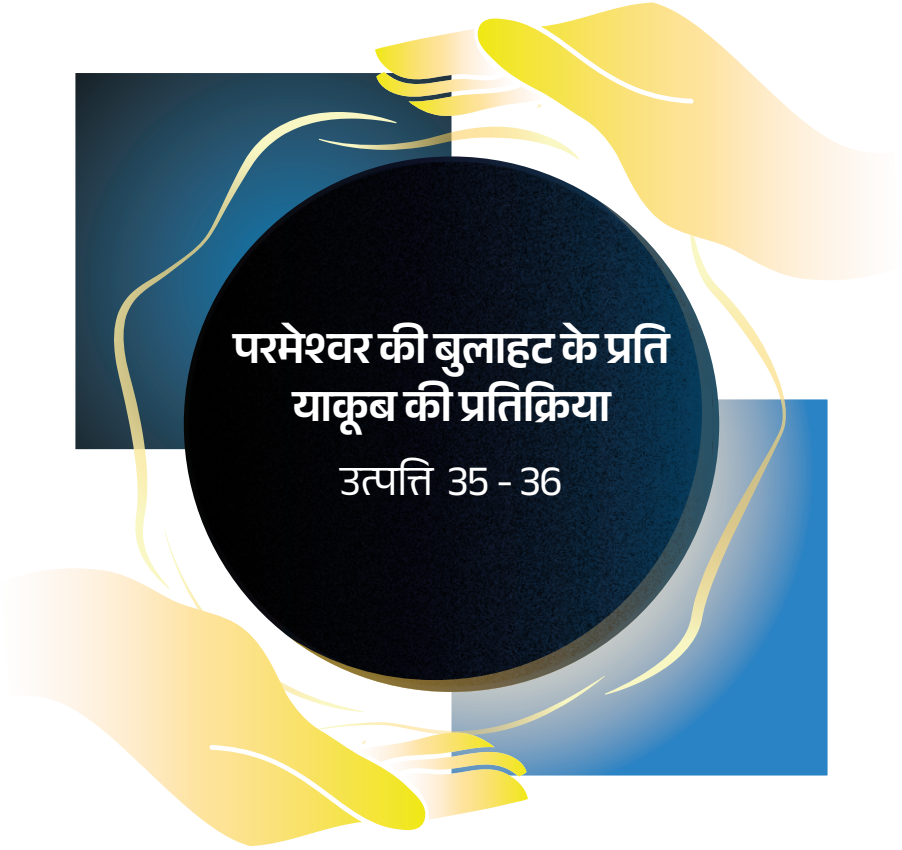
अगुवाई में कमी: मुश्किल समय में याकूब अपने बेटों का सही मार्गदर्शन नहीं कर पाए और इसके नतीजे बहुत बुरे रहे। क्या आपके परिवार या रिश्तों में ऐसी कोई स्थिति है जहाँ आप मुश्किल अगुवाई की ज़िम्मेदारी लेने से बच रहे हैं, क्योंकि ऐसा करना आपको असहज लगता है?

सवाल 3

क्या आपकी ज़िंदगी में कभी "शिमोन और लेवी" जैसा कोई पल आया है - यानी कोई ऐसी स्थिति जब आपने आत्मा की बजाय अपनी इंसानी फितरत के हिसाब से प्रतिक्रिया दी हो? सोचिए कि क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को आशीर्वाद दे सकते हैं या उससे प्यार से बात कर सकते हैं जिसने आपके साथ बुरा किया हो, और बदला लेने का काम पूरी तरह से प्रभु पर छोड़ दें।

सवाल 4

याकूब ने अपनी बदनामी के लिए अपने बेटों को डांटा, लेकिन उस पाप के बारे में कुछ नहीं कहा। पवित्र आत्मा से पूछें कि आप कहाँ इस बात पर ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं कि चीज़ें कैसी दिखती हैं, बजाय इसके कि असल में सही क्या है।



परमेश्वर की बुलाहट के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया

उत्पत्ति 35 - 36

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 35 - 36
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 35:1-29, उत्पत्ति 36:1-43

प्रिय परमेश्वर,

तेरे वचन पर ठहरकर मनन करने के इस अवसर के लिए तेरा धन्यवाद। हमें तेरी योजना के बड़े चित्र को देखने में सहायता कर। हमारी समझ को गहरा कर, हमारे विश्वास को दृढ़ कर, और हमें बुद्धि तथा उद्देश्य के साथ आगे चलने की अगुवाई कर।

आमीन।

याकूब के परिवार के साथ हुए दुखद अनुभवों के बाद, **परमेश्वर ने याकूब से बेतेल वापस जाने को कहा।** उस जगह का नाम सुनते ही याकूब को कई अहम बातें याद आ गई होंगी। जवानी के दिनों में, जब वह एसाव से बचने के लिए अपनी माँ का घर छोड़कर भागा था, तो **उसने अपनी पहली रात बेतेल में ही बिताई थी।** एक पत्थर को तकिया बनाकर सोते हुए, **याकूब ने धरती से स्वर्ग तक जाती एक सीढ़ी का सपना देखा था** और उसने उस पर स्वर्गदूतों को ऊपर-नीचे आते-जाते देखा था।

याकूब अपने घर में आत्मिक अगुवाई की शुरुआत करता है

अब परमेश्वर ने याकूब को वापस बेतेल बुलाया, और तब उसने अंततः **अपने घर में आत्मिक अगुवाई करना शुरू किया।**



परमेश्वर ने याकूब को तीन निर्देश दिए:

सबसे पहले, उन्हें "तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो;"(उत्पत्ति 35:2) उनके पास मूर्तियाँ क्यों थीं? जब याकूब, राहेल और लिया लाबान से भाग रहे थे, तो राहेल परिवार की मूर्तियाँ साथ ले गई थी।

यह मान लेना आसान होगा कि याकूब ने उन्हें हटा दिया होगा क्योंकि वह जीवित और सच्चे परमेश्वर को जानता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था, और अब हम देखते हैं कि **उसका पूरा परिवार इन पराए देवताओं की उपासना कर रहा था।** अब याकूब ने कहा कि उन्हें इनसे छुटकारा पाना होगा।

दूसरा, परमेश्वर कहता है, **"शुद्ध हो जाओ।"** विश्वासी के लिए इसका अर्थ है **अपने जीवन के पाप का सामना करना** (देखें 1 यूहन्ना 1:9)। **परमेश्वर क्षमा करेगा, लेकिन हमें पाप स्वीकार करना होगा।**

तीसरा, **"अपने वस्त्र बदलो।"** दूसरे शब्दों में, पुराने वस्त्र उतार दो। पवित्रशास्त्र में **वस्त्र अक्सर जीवन की आदतों का प्रतीक हैं।** जैसे एक फुटबॉल खिलाड़ी अपनी वर्दी पहनता है, वही उसकी पहचान और जीवन-शैली को दर्शाती है।

याकूब ने परमेश्वर के लिए जीना शुरू किया

जिस दिन याकूब बेतेल वापस गया, उसने परमेश्वर के लिए जीना शुरू कर दिया। जब याकूब ने बेतेल के बारे में सोचा, तो उसे याद आया कि **जब वह मुश्किल में था, तब परमेश्वर उससे कैसे मिला था।** वह घर से भाग रहा था, उसे घर की याद आ रही थी और वह अकेला था; वह बेतेल पहुँचा**, जहाँ परमेश्वर ने उससे अपनी विश्वासयोग्यता का वादा किया था।** अब, कई सालों बाद, याकूब ने देखा कि परमेश्वर ने सचमुच उसका साथ निभाया था। **अब परमेश्वर ने उससे कहा, "वहाँ वापस जा जहाँ से तुने शुरुआत की थी। फिर से शुरू कर।"**

जब वे बेतेल (जिसका नाम पहले लूज़ था) लौट रहे थे, **तो परमेश्वर ने याकूब और उसके परिवार की रक्षा की,** इसलिए किसी ने उनका पीछा नहीं किया। **उसने वहाँ एक वेदी बनाई और उस जगह का नाम एल-बेतेल रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर के घर का परमेश्वर।" यह याकूब के जीवन में आत्मिक विकास को दर्शाता है।**

परमेश्वर अपना वादा फिर से दोहराता है

उस जगह पर, जहाँ दशकों पहले परमेश्वर याकूब से मिले थे, वे फिर से उसके सामने प्रकट हुए। इतने सालों तक परमेश्वर याकूब के साथ काम करते रहे, लेकिन कई मायनों में लाबान के साथ बिताए गए वे साल बेकार ही गए।

"और परमेश्वर ने उससे कहा, "अब तक तो तेरा नाम याकूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा।" इस प्रकार उसने उसका नाम इस्राएल रखा। फिर परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। तू फूले-फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन् जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।" उत्पत्ति 35:10-11

"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ" - यह वही नाम है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने अब्राहम के सामने अपनी पहचान बताने के लिए किया था।

"और जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूँ, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूँगा।" उत्पत्ति 35:12

यह **तीसरी बार है जब परमेश्वर ने इस महत्वपूर्ण ज़मीन का वादा** उसके परिवार से किया है - पहले अब्राहम से, फिर इसहाक से, और अब याकूब से। प्रभु को इन सभी लोगों को इसके बारे में कम से कम दो या तीन बार बताना पड़ा। **याकूब ने उस जगह पर पत्थर का एक खंभा बनाया** जहाँ परमेश्वर ने उससे बात की थी। उस खंभे पर उसने पेय चढ़ाया और उस जगह का नाम बेतेल रखा।

यह पेय बलि का पहला ज़िक्र है। लेव्यव्यवस्था की किताब में पाँच तरह की भेंटों के बारे में बताया गया है, लेकिन पेय की भेंट का ज़िक्र नहीं है। पेय की भेंट को बस दूसरी भेंटों पर डाला जाता था और वह भाप बनकर ऊपर उठ जाती थी। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा था **कि उसका जीवन भी इसी प्रकार पेय की भेंट के समान पूरी तरह उंडेल दिया जाए।** (फिलिप्पियों 2:17)।

बिन्यामीन का जन्म

अपनी प्रिय पत्नी राहेल से याकूब का एक पुत्र था, यूसुफ। अब जब वे बेतेल से यात्रा कर रहे थे, तब **राहेल को अपने दूसरे पुत्र के जन्म की पीड़ा शुरू हुई।** बच्चे के जन्म के समय **राहेल मृत्यु के निकट थी।** उसने उसका नाम बेनोनी रखा, जिसका अर्थ है "मेरे दुःख का पुत्र।" लेकिन याकूब ने उसकी ओर देखकर कहा, "मैं अपनी प्रिय राहेल को खो चुका हूँ, और यह छोटा बच्चा उसी जैसा दिखता है, इसलिए **मैं इसका नाम बिन्यामीन रखूँगा,"मेरे दाहिने हाथ का पुत्र।"**

यह सत्य था कि वह बालक राहेल के दुःख का पुत्र था, लेकिन याकूब उसे बेनोनी नहीं कह सका। वह उसके दुःख का कारण नहीं था; वह उसके दाहिने हाथ का पुत्र था-उसकी लाठी, उसका सहारा, **वह जिस पर वह अपने बुढ़ापे में भरोसा करेगा।** इससे हमें उस बड़े दुःख को समझने में सहायता मिलती है जिससे याकूब बाद में गुज़रेगा। **यह सब याकूब के पाप की जड़ से उत्पन्न हुआ।**

परमेश्वर हमारे जीवन के गलत कार्यों को स्वीकार नहीं करता। हम उनसे बच नहीं सकते।



उन कई मुश्किल सालों में **राहेल के प्रति याकूब का प्रेम शायद उसके जीवन की एकमात्र अच्छी बात थी।** वह पूरी तरह उसके प्रति समर्पित था और उसकी हर बात मान लेता था (जैसे अपने पिता की मूर्तियाँ अपने पास रखना)। राहेल ने याकूब को उसका पुत्र यूसुफ दिया था, और अब उसने बिन्यामीन को जन्म दिया। उसके जीवन का अर्थ राहेल की मृत्यु बन गया। याकूब के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था।

बाकी दस लड़कों से उसे कोई खुशी नहीं मिलती थी। **परमेश्वर उसे शायद हर दिन याद दिलाता था कि एक से ज़्यादा पत्नी रखना पाप है।** यह बात खास तौर पर तब साफ़ हो जाती है जब हम देखते हैं कि युसूफ के सौतेले भाइयों ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया।

याकूब यूसुफ़ और बिन्यामीन से बहुत प्यार करता था, और बाकी बेटे उनसे जलते थे। उसे यूसुफ़ के साथ ऐसा भेदभाव नहीं करना चाहिए था, क्योंकि वह जानता था कि जब उसके पिता ने उसे नज़रअंदाज़ किया था, तो उसके अपने शुरुआती साल कितने तकलीफ़ भरे रहे थे। उसे पता था कि इससे कितनी परेशानी हुई थी।

इसहाक की मृत्यु

बुज़ुर्ग इसहाक, जो लंबी उम्र जी चुका था, चल बसा और उसके बेटों एसाव और याकूब ने उसे दफ़नाया। याकूब के उस देश में लौटने के बाद यह एकमात्र मौका था जब वे भाई फिर से एक साथ थे।

एसाव के खुद को जानने से पहले ही परमेश्वर उसे जानता था।

एसाव और उसका परिवार **एदोम राष्ट्र बना,** जो मृत सागर के दक्षिण-पूर्व में बसा। अगर हम उनके नामों की सूची बनाएँ, तो वे वही नाम होंगे जो आज अरब रेगिस्तान में प्रचलित हैं। यह एक पहाड़ी इलाका है। **यहाँ आज भी राजधानी शहर पेट्रा मौजूद है, जो चट्टानों को काटकर बनाया गया था। एदोम के बारे में** यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और ओबद्याह की भविष्यवाणियाँ बहुत ही सटीक रूप से पूरी हुई हैं।

एसाव एक आकर्षक नौजवान था, लेकिन **वह शारीरिक इच्छाओं में जीने वाला इंसान था।** हालाँकि, याकूब भी अपनी ज़िंदगी के ज़्यादातर समय ऐसा ही था। क्या एसाव के बजाय याकूब को चुनने में परमेश्वर से कोई गलती हुई थी? एसाव बाहर से बहुत अच्छा दिखता था। ओबद्याह की एक छोटी सी भविष्यवाणी हमें एसाव का असली रूप दिखाती है। अब तक, एक एसाव से लगभग 1,00,000 एदोमी बन चुके थे। उनमें से हर एक छोटा एसाव ही था। उस जाति को देखिए और आपको पता चल जाएगा कि एसाव से क्या निकला। हम क्या देखते हैं? **एक ऐसी जाति जो घमंड से भरी हुई है (ओबद्याह 1:3-4)। उनके दिल का घमंड आज़ादी का ऐलान था—एक ऐसी सोच जो कहती है कि वह परमेश्वर के बिना जी सकती है** और उसे परमेश्वर की कोई ज़रूरत नहीं है। यही था एसाव।

पुराने नियम की अंतिम पुस्तक में परमेश्वर कहता है, **"तौभी मैं ने याकूब से प्रेम रखा, परन्तु एसाव से बैर रखा"** (मलाकी 1:2–3)। परमेश्वर ने यह बात इन दोनों पुरुषों के जीवन के एक हज़ार वर्ष से भी अधिक समय बाद कही, **लेकिन वह आरंभ से ही एसाव के हृदय को जानता था।** जब उनके जीवन का इतिहास प्रकट हुआ, तब यह स्पष्ट हो गया कि परमेश्वर का चुनाव बिल्कुल सही था।

गर हम एसाव और उसकी तीनों पत्नियों के साथ चलें, तो हम उनके साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश से निकलकर कनान के सेईर देश में पहुँचेंगे। **वहीं एसाव के परिवार में अमालेक का जन्म हुआ, और यहीं से अमालेकियों की शुरुआत हुई।** सदियों के दौरान ये मरुभूमि की जातियाँ अनेक दिशाओं में फैल गईं, जिनमें से कुछ उत्तर अफ्रीका तक पहुँच गईं। **सभी अरब जातियाँ अब्राहम से उत्पन्न हुईं—हाजिरा,** जो मिस्री थी, के द्वारा, और कतूरा के द्वारा, जिससे अब्राहम ने सारा की मृत्यु के बाद विवाह किया था। इन जातियों ने आपस में विवाह किए, फिर भी वे इस्राएलियों के ही परिवार से संबंधित हैं।

यह मध्य पूर्व का पारिवारिक इतिहास है, जो किसी भी दूसरे स्रोत से कहीं ज़्यादा पीछे तक जाता है और आज की सुर्खियों में हम तक पहुँचता है।



परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 35-36 से हमारे लिए सीख

1 **पाप से शुद्धि और अंगीकार:**

याकूब ने अपने परिवार को, **"शुद्ध हो जाओ" और अपने पुराने वस्त्र उतार देने की जो आज्ञा दी, वह पाप का सामना करने और पुरानी आदतों को छोड़ने का प्रतीक है।** पुराने नियम में यह शारीरिक शुद्धि, **1 यूहन्ना 1:9** में पाई जाने वाली आत्मिक सच्चाई से तुलना की गई है। नए नियम के विश्वासी के लिए इसका अर्थ है कि यद्यपि **परमेश्वर क्षमा प्रदान करता है, फिर भी हमारे जीवन में पापों को स्वीकार करने और उनसे निपटने की जिम्मेदारी भी हमारी है।**



2 **पेय भेंट के रूप में उंडेला गया जीवन:**

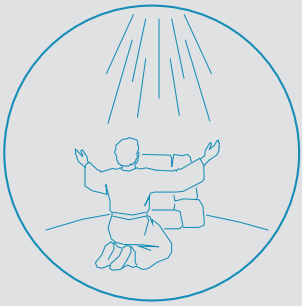
जब परमेश्वर ने याकूब से बात की, तब उसने एक पत्थर का स्मारक खड़ा किया और उस पर पेय बलि उंडेली। **पवित्रशास्त्र में पेय बलि का यह पहला उल्लेख है।** यह ऐसी भेंट थी जो उंडेले जाने पर भाप बनकर ऊपर उठ जाती थी।



- यह सत्य **फिलिप्पियों 2:17** से मेल खाता है, जहाँ **प्रेरित पौलुस ने इसी चित्र का उपयोग अपने सर्वोच्च आत्मिक लक्ष्य को व्यक्त करने के लिए किया।** उसकी इच्छा थी कि उसका अपना जीवन भी **परमेश्वर की सेवा में पेय बलि के समान पूरी तरह उंडेल दिया जाए।**

3 **अपने वादे के प्रति परमेश्वर की अटूट वफ़ादारी और आज्ञाकारी उपासना के ज़रिए विश्वासी की आत्मिक परिपक्वता का प्रमाण।**

- जब याकूब ने बेतेल लौटने की परमेश्वर की बुलाहट का पालन किया, तब उसने दिखाया कि उसने **अंततः परमेश्वर के लिए जीना और अपने जीवन में आत्मिक अगुवाई करना शुरू कर दिया था।** उसकी आज्ञाकारिता के उत्तर में परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुए, आधिकारिक रूप से उसका नाम बदलकर इस्राएल रखा, और कहा, **"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।"** स्रोत बताते हैं कि यही वह नाम है जिससे परमेश्वर ने पहली बार स्वयं को अब्राहम पर प्रकट किया था। उसी समय **परमेश्वर ने अपनी अनन्त वाचा को फिर से दृढ़ किया और याकूब से उसी देश का वादा किया,** जिसका वादा वह पहले अब्राहम और इसहाक से कर चुके थे।



- इस दिव्य प्रकट होने के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया उसकी **आत्मिक परिपक्वता की यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।** उसने एक **वेदी बनाकर और उस स्थान का नाम एल-बेतेल रखा,** जिसका मतलब है "परमेश्वर के भवन का परमेश्वर", उचित प्रतिक्रिया दी। अपने दादा अब्राहम की तरह, **सर्वशक्तिमान परमेश्वर में याकूब का विश्वास उसके कार्यों से प्रकट हुआ।** जहाँ से उसकी यात्रा आरम्भ हुई थी, परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार वहीं लौटने का सही निर्णय लेकर और आराधना की वेदी बनाकर, **याकूब ने अपने जीवन में वास्तविक आत्मिक उन्नति का प्रमाण दिया।**

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

जब परमेश्वर ने स्वयं को "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के रूप में प्रकट किया और देश के विषय में अपनी प्रतिज्ञा को फिर से दृढ़ किया, तब याकूब ने परमेश्वर की महान विश्वासयोग्यता को पहचाना और उस स्थान का नाम एल-बेतेल, अर्थात् "परमेश्वर के भवन का परमेश्वर", रखा।

अपने आत्मिक जीवन की यात्रा को पीछे मुड़कर देखें। परमेश्वर ने आपके जीवन में अपने वादों को कैसे पूरा किया है? और कौन से खास पल या फैसले यह दिखाते हैं कि जब से आपने उनके साथ चलना शुरू किया है, तब से आप आत्मिक रूप से कितने आगे बढ़े हैं?

सवाल 2

याकूब की आत्मिक उन्नति उसके कार्यों से स्पष्ट दिखाई दी; उसने बेतेल लौटने के परमेश्वर के निर्देश का पालन किया और अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट करने के लिए आराधना की एक वेदी बनाई।

आप अपनी ज़िंदगी में कौन-सी व्यावहारिक "वेदी" बना सकते हैं, जैसे कि प्रार्थना के लिए एक निश्चित समय और जगह तय करना, अपने घर में आत्मिक अगुवाई करना, या सर्वशक्तिमान परमेश्वर में अपना भरोसा दिखाने के लिए आज्ञा मानने का कोई खास फ़ैसला करना?

सवाल 3

मूर्तियों को दूर करना: यद्यपि याकूब सच्चे परमेश्वर को जानता था, फिर भी उसने वर्षों तक अपने परिवार को "पराए देवताओं" को अपने पास रखने दिया। क्या आपके जीवन या घर में ऐसी कोई छिपी हुई मूर्तियाँ, समझौते, या पुरानी आदतें (पुराने वस्त्र) हैं, जिन्हें आपको आत्मिक अगुवाई में चलने के लिए अब अंततः छोड़ देना चाहिए?

सवाल 4

बेतेल लौटना: परमेश्वर ने याकूब से उस स्थान पर लौटने को कहा जहाँ उसने उसकी विपत्ति के समय उससे भेंट की थी और अपनी विश्वासयोग्यता सिद्ध की थी। आपका "बेतेल" कौन-सा है—आपके जीवन का वह विशेष समय या क्षण, जब कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर ने आपसे भेंट की थी? उस अनुभव को स्मरण करना आज आपको फिर से एक नई शुरुआत करने में कैसे सहायता कर सकता है?

सवाल 5

अपने जीवन को उंडेल देना: याकूब की पेय बलि उस जीवन का आदर्श प्रस्तुत करती है जो पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित है। यही सिद्धांत प्रेरित पौलुस के जीवन में भी दिखाई देता है। आप किन व्यावहारिक तरीकों से अपने जीवन, समय और संसाधनों को परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए "पेय बलि" के समान उंडेल रहे हैं?

सवाल 6

अपने हृदय में घमण्ड की जाँच करें: यद्यपि एसाव बाहरी रूप से आकर्षक व्यक्ति था, उसके वंशज एक ऐसे राष्ट्र बन गए जो घमण्ड से भर गया और ऐसे लोगों के समान जीने लगे जो मानते थे कि वे परमेश्वर के बिना भी जीवन जी सकते हैं। क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आप नम्रता के साथ परमेश्वर पर निर्भर रहने के बजाय "शारीरिक स्वभाव" के अनुसार चल रहे हैं या परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जीने की घोषणा कर रहे हैं?

THRU the BIBLE

हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org